

[2025] 3 एस.सी.आर. 1350: 2025 आईएनएससी 411

गैस्ट्रेड इंटरनेशनल

बनाम

सीमा शुल्क आयुक्त, कांडला

(सिविल अपील संख्या 4475/2025)

28 मार्च 2025

[बी. वी. नागरत्ना और

नॉगमेइकापम कोटिस्वर सिंह,* न्यायाधीश]

विचार के लिए मुद्दा

क्या आयातित माल को अपीलकर्ताओं द्वारा दावा किए गए आधार तेल के रूप में माना जाना है या सीमा शुल्क अधिकारियों द्वारा निर्धारित उच्च गति वाले डीजल (एच. एस. डी.) के रूप में माना जाना है, जिसे अपीलकर्ताओं द्वारा चुनौती दी जाती है। आदालत ने निष्कर्ष निकाला कि कस्टम प्राधिकरण ने संभाव्यता के आधार पर परीक्षण लागू करके यह साबित कर दिया है कि आयातित वस्तु हाईस्पीड डीजल (एचएसडी) है। क्या उच्च न्यायालय को संभाव्यता की प्रधानता के परीक्षण को लागू करके और यह निष्कर्ष निकालकर कि विचाराधीन पदार्थ एच. एस. डी. है, उचित ठहराया गया था।

मूलबिंदु[†]

सीमा शुल्क अधिनियम, 1962-ss.111(डी) और (एम), 112 (ए) और (बी), 114ए और 117-सीमा शुल्क अधिनियम, 1975-पहली और दूसरी अनुसूची-पहली अनुसूची-शुल्क अधिनियम के भाग 2 में आयात शुल्क-नियम 4- पेट्रोलियम अधिनियम, 1934-धारा 2 (सी)- न्यायनिर्णायक प्राधिकरण ने अभिनिर्धारित किया कि विचाराधीन उत्पाद बेस ऑयल नहीं था, बल्कि एचएसडी था और तदनुसार, जुर्माना लगाने के अलावा उसे जब्त करने का आदेश दिया- हालाँकि, अपीलीय प्राधिकरण, सीमा शुल्क, उत्पाद शुल्क और सेवा कर अपीलीय न्यायाधिकरण (सी. ई. एस. टी. ए. टी.) ने ऐसा ही अभिनिर्धारित किया एच. एस. डी. के बजाय बेस ऑयल, इस प्रकार न्यायनिर्णायक प्राधिकरण के निर्णय को उलटते हुए- उच्च न्यायालय ने अपीलीय न्यायाधिकरण के निर्णय को उलट दिया और आयातित वस्तुओं को एच. एस. डी.-

* लेखक

शुद्धता रखने वाले न्यायनिर्णायक प्राधिकरण के निर्णय की पुष्टि की:

आयोजित : 1. हाई स्पीड डीजल (एच. एस. डी.) को भारतीय मानक ब्यूरो के भारतीय मानक विनिर्देशन IS:1460:2005 के अनुरूप किसी भी हाइड्रोकार्बन तेल के रूप में परिभाषित किया गया है, इस तत्काल मामले में, तीन प्रयोगशाला परीक्षणों और विशेषज्ञ की राय के साक्ष्य के आधार पर, उच्च न्यायालय ने यह निष्कर्ष निकाला कि सीमा शुल्क प्राधिकरण यह साबित करने में सफल रहा कि आयातित उत्पाद HSD है, जो संभावना के प्रधानता के परीक्षण से सिद्ध हुआ - उच्च न्यायालय ने इस निष्कर्ष पर पहुंचने में सामान्य नियमों का उल्लेख नहीं किया, जो इस अनुसूची की व्याख्या के लिए सामान्य नियमों के नियम 4 के तहत "सबसे निकटतम" परीक्षण द्वारा लागू होते हैं, जैसा कि टैरिफ अधिनियम के भाग 2 में पहले अनुसूची- आयात टैरिफ में दिया गया है - पहला रिपोर्ट केंद्रीय उत्पाद शुल्क एवं सीमा शुल्क प्रयोगशाला, वडोदरा द्वारा तैयार किया गया था - पहले परीक्षण के परिणाम में विशेषज्ञ द्वारा स्पष्ट राय नहीं दी गई कि नमूने वास्तव में HSD के हैं या उन्हें HSD माना जा सकता है - 8 मापदंडों के परीक्षण के आधार पर पहले परीक्षण को इस प्रकार पूर्ण राय नहीं माना जा सकता कि नमूना वास्तव में HSD का हो - दूसरे परीक्षण रिपोर्ट जो केंद्रीय राजस्व नियंत्रण प्रयोगशाला (CRCL), नई दिल्ली द्वारा 03.07.2018 को प्रस्तुत किया गया, उसमें उक्त नमूने का परीक्षण 21/22 निर्धारित मानदंडों में से 12 पर किया गया था और इस न्यायालय ने पाया कि इन 12 में से कम से कम 2 मापदंडों पर नमूना IS 1460:2005 के मानकों को पूरा नहीं करता दिखता है- दूसरी परीक्षण रिपोर्ट में विशेष रूप से यह नहीं कहा गया है कि निर्धारित विशेषताओं के कारण, नमूनों को एच. एस. डी. के रूप में माना जा सकता है- इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड की केंद्रीय प्रयोगशाला द्वारा तैयार की गई तीसरी रिपोर्ट में भी स्पष्ट और स्पष्ट राय नहीं दी गई है कि परीक्षण किए गए नमूने वास्तव में एच. एस. डी. के हैं- परीक्षण करने वाले विशेषज्ञ गवाह ने भी यह तय करने के लिए 8 मापदंडों के महत्व के बारे में महत्वपूर्ण प्रश्न का उत्तर देने से परहेज किया कि नमूना एच. एस. डी. का है या नहीं- न तो विशेषज्ञ और न ही परीक्षण के परिणामों ने स्पष्ट रूप से कहा कि ये नमूने वास्तव में एच. एस. डी. के हैं क्योंकि कुछ मापदंडों की पूर्ति पर-बचाव के कारण। विशेषज्ञ गवाह द्वारा दिए गए निर्णायक और गैर-प्रतिबद्ध उत्तर, वैध निष्कर्ष जो निकाला जा सकता है वह यह है कि उसकी राय और परीक्षण के परिणाम भी अनिर्णायक, अस्पष्ट हैं और

तेल को एच. एस. डी. के रूप में निर्धारित करने के लिए पूरी तरह से विश्वसनीय नहीं कहा जा सकता है- तत्काल मामले में, उच्च न्यायालय का निष्कर्ष मुख्य रूप से संभावना की प्रधानता के परीक्षण को लागू करने पर आधारित है जो आवश्यक रूप से "सबसे समान" परीक्षण को पूरा नहीं कर सकता है- उच्च न्यायालय अपूर्ण परीक्षण रिपोर्ट और विशेषज्ञ की गैर-प्रतिबद्ध राय के आधार पर निष्कर्ष पर पहुंचा, जिसने स्पष्ट शब्दों में यह नहीं कहा था कि आयातित माल एच. एस. डी. हैं- कोई राय नहीं थी यह कि आयातित माल "सबसे समान" के परीक्षण को संतुष्ट करने के लिए एच. एस. डी. के समान हैं- निश्चित राय और यह निष्कर्ष कि आयातित माल एच. एस. डी. के "सबसे अधिक समान" हैं, आयातित माल को एच. एस. डी. के रूप में वर्गीकृत करने के लिए रिपोर्ट और राय में गायब है- इसलिए, परीक्षण के परिणाम अनिर्णायक हैं, इसलिए विशेषज्ञ की राय होने के कारण, यह न्यायालय उच्च न्यायालय के निष्कर्ष से असहमत है- अनिर्णायक साक्ष्य के कारण अपीलार्थियों को दिए गए संदेह का लाभ। [पैरा 32,43,46,47,48,50,52,63,71,84,86,87]

साक्ष्य अधिनियम, 1872- एस.45- विशेषज्ञ राय- चर्चा की गई:

आयोजित: यह विशेषज्ञों की राय, चाहे वह कितनी भी महत्वपूर्ण हो, न्यायालय पर बाध्यकारी नहीं होती और केवल न्यायालय के लिए किसी तथ्य पर अंतिम निर्णय लेने हेतु विचार करने योग्य होती है। चूंकि न्यायालय विज्ञान की शाखा में विशेषज्ञ नहीं होते, अतः वे सामान्यतः वैज्ञानिक रिपोर्ट स्वीकार करते हैं और उसी के आधार पर कार्य करते हैं। परंतु जहाँ विशेषज्ञ की राय में कुछ कमियाँ, संदेहास्पद बातें, अस्पष्टता अथवा अपर्याप्तता पाई जाती है, वहाँ वह न्यायिक जांच के अधीन होती है और ऐसे परिस्थितियों में पूरी तरह उस पर निर्भर करना सुरक्षित नहीं होता। [पैरा 57]

पेट्रोलियम अधिनियम, 1934 -एस. 2 (सी)-फ्लैश-पॉइंट- पेट्रोलियम उत्पादों का वर्गीकरण- यह निर्धारित करने में फ्लैश पॉइंट का महत्व कि पेट्रोलियम उत्पाद एच. एस. डी. है या नहीं।

आयोजित: पेट्रोलियम अधिनियम, 1934 की धारा 2(c) के अंतर्गत किसी भी पेट्रोलियम का फ्लैशपॉइंट उस न्यूनतम तापमान के रूप में परिभाषित किया गया है, जिस तापमान पर वह ऐसा वाष्प उत्पन्न करता है जो प्रज्वलित किए जाने पर क्षणभंगुर चमक पैदा करता है, जिसे अध्याय और अधिनियम के तहत बनाए गए

नियमों के अनुसार निर्धारित किया जाता है। पेट्रोलियम अधिनियम पेट्रोलियम उत्पादों को उनके फ्लैशपॉइंट की मात्रा के आधार पर तीन वर्गों में विभाजित करता है। इसलिए फ्लैशपॉइंट से संबंधित विनिर्देशों का कुछ महत्व होता है, भले ही यह यह निर्धारित करने में सबसे महत्वपूर्ण पैरामीटर न हो कि कोई पेट्रोलियम उत्पाद हाइ स्पीड डीजल (HSD) है या नहीं। [पैरा 68,69,70]

साक्ष्य अधिनियम, 1872 - एस. 3- प्रमाण के विभिन्न मानक - संभाव्यता की पूर्व प्रतिक्रिया- उचित संदेह से परे:

आयोजित: साक्ष्य अधिनियम, 1872 की धारा 3 के अंतर्गत, किसी तथ्य को प्रमाणित तब कहा जाता है जब विचारणीय मामलों को ध्यान में रखते हुए, अदालत या तो उस तथ्य के अस्तित्व पर विश्वास करती है, या इसके अस्तित्व को इतना संभावित मानती है कि विवेकशील व्यक्ति विशेष मामले की परिस्थितियों में ऐसा मानकर कार्य करना उचित समझे कि वह अस्तित्व में है। यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि प्रमाण अधिनियम पूर्णतः निश्चित प्रमाण की मांग नहीं करता है। प्रमाण अधिनियम में "प्रबल संभावना" (preponderance of probability) और "संभावनाओं से परे संदेह" (beyond reasonable doubt) की परिभाषा कहीं भी नहीं दी गई है, जो विभिन्न प्रमाण के मानक हैं। अपराध और दीवानी न्यायक्षेत्रों में प्रमाण के विभिन्न मानक समय के साथ विकसित हुए हैं, क्योंकि इन दोनों में दावेदार हितों का स्तर भिन्न होता है। अपराध प्रविधि में प्रतिवादी के लिए दांव अधिक बड़ा होता है, क्योंकि इसमें व्यक्ति के कीमती अधिकार और स्वतंत्रताएं शामिल होती हैं, जिनका हरण अपराध सिद्ध होने पर हो सकता है। इसके विपरीत, दीवानी दायित्व कम निंदनीय होता है तथा दंड, यदि हो, तो कम गंभीर होता है। उपरोक्त निर्णय यह स्थापित करते हैं कि संभावनाओं की डिग्री में विभिन्नता हो सकती है। निश्चित रूप से, जहां कार्यवाही तकनीकी या वैज्ञानिक मानकों की पूर्ति पर आधारित होती है, साथ ही जब दंडात्मक और जब्ती संबंधी परिणाम जुड़े होते हैं, वहां संभावनाओं की डिग्री उच्च स्तर की होती है, न कि केवल साधारण संभावना। [पैरा 75,76,78]

मामला कानून उद्धृत किया गया

हि.प्र. राज्य बनाम जिया लाल [1999] पूरक.2 एससीआर 318:(1999) 7 एससीसी 280; दयाल सिंह बनाम उत्तरांचल राज्य [2012] 10 एससीआर 157:(2012) 8

एस. सी. सी. 263; एम. सिद्दीक (राम जन्मभूमि मंदिर- बनाम सुरेश दास [2019] 18 एस. सी. आर. 1:(2020) 1 एस. सी. सी. 1- निर्भरता दर्शाई गई। सीमा शुल्क कलेक्टर, मद्रास और अन्य बनाम डी. भूरमल [1974] 3 एस. सी. आर. 833; ए. आई. आर 1974 एस. सी. 859; ए. एन. गुहा एंड कंपनी बनाम कलेक्टर [1996 (86) ई. एल. टी. 333]; आर. वी. ई. वेंकटचाला गौंडर बनाम अरुलमिगु विश्वेसरस्वामी और वी. पी., 1996 की सिविल अपील संख्या 10585 में आदेश 08.10.2023; दुर्गा ऑयल कंपनी बनाम यू. पी. राज्य। [1998] 3 एससीआर 922:(1998) 6 एस. सी. सी. 299- संदर्भित।

अधिनियमों की सूची

सीमा शुल्क अधिनियम, 1962; सीमा शुल्क शुल्क अधिनियम, 1975; पेट्रोलियम अधिनियम, 1934.

मुख्य शब्दों की सूची

"सबसे समान" परीक्षण; हाई स्पीड डीजल; बेस ऑयल; संभावना की प्रधानता का सिद्धांत; किसी भी पेट्रोलियम का फ्लैश पॉइंट; विशेषज्ञ की राय; प्रमाण का मानक; भारतीय मानक ब्यूरो का भारतीय मानक विनिर्देशन इस प्रकार है। S1460:2005; पेट्रोलियम उत्पादों का वर्गीकरण; उचित संदेह से परे।

मामले की उत्पत्ति

सिविल अपीलीय क्षेत्राधिकार: सिविल अपील संख्या 4475/2025

गुजरात उच्चन्यायालय, अहमदाबाद के दिनांक 20.01.2022 के निर्णय और आदेश से, TA संख्या 299/2021 में

साथ में

सिविल अपील संख्या 4476 और 4477/2025

पार्टियों के लिए उपस्थिति

अपीलार्थी के लिए:

अरविंद पी. दातार, वरिष्ठ अधिवक्ता, एस. जयकुमार, कार्तिक जिंदल, अनंत गौतम, आशदीप कौर, राजेश कुमार गौतम।

अधिवक्ता उत्तरदाता के लिए:

एन. वेंकटरमन, ए. एस. जी., गुरमीत सिंह मक्कर, रुपेश कुमार, अदित खुराना, सुश्री आकांक्षा कौल, उदय खन्ना, धनंजय महापात्रा, मुकेश कुमार मरोरिया।

उच्चतम न्यायालय का निर्णय / आदेश

फैसला

नॉगमेइकापम कोटिस्वर सिंह, न्यायाधीश

2024 की डायरी संख्या 32623 से उत्पन्न विशेष अनुमति याचिका में देरी को माफ कर दिया गया। सभी विशेष अवकाश याचिकाओं में अवकाश अनुदत्त जाती है।

2. अपीलों के इस समूह में शामिल मुद्दा यह है कि क्या आयातित माल को आधार तेल के रूप में माना जाना चाहिए जैसा कि अपीलकर्ताओं द्वारा दावा किया गया है या उच्च गति डीजल (एच. एस. डी.) जैसा कि सीमा शुल्क अधिकारियों द्वारा निर्धारित किया गया है, जिसे अपीलकर्ताओं द्वारा चुनौती दी गई है। यदि उत्पाद को एच. एस. डी. के रूप में माना जाता है, तो यह एक निषिद्ध वस्तु होगी जिसे राज्य व्यापार उद्यम के अलावा किसी अन्य निजी संस्था द्वारा आयात नहीं किया जा सकता था, जिस स्थिति में इसे जब्त किया जा सकता था और अपीलकर्ता आयातकों पर जुर्माना लगाया जा सकता था।
3. सीमा शुल्क आयुक्त, न्यायनिर्णायक प्राधिकरण ने दिनांक 03.12.2019 के आदेश के माध्यम से माना कि उक्त उत्पाद बेस ऑयल नहीं है, बल्कि एचएसडी है और तदनुसार, जुर्माना लगाने के अलावा इसे जब्त करने का आदेश दिया। दूसरी ओर, अपीलीय प्राधिकरण, सीमा शुल्क, उत्पाद शुल्क और सेवा कर अपीलीय न्यायाधिकरण (सी. ई. एस. टी. ए. टी) सीमा शुल्क अधिकारियों द्वारा गुजरात उच्च न्यायालय के समक्ष चुनौती दिए जाने पर, उच्च न्यायालय ने अपीलीय न्यायाधिकरण के फैसले को उलट दिया और आयातित वस्तुओं को एच. एस. डी. मानने वाले न्यायनिर्णायक प्राधिकरण के फैसले की पुष्टि की।
4. मामलों को सही नज़रिए से समझने के लिए, संबंधित तथ्यों का संक्षिप्त ज़िक्र ज़रूरी हो सकता है।

तथ्य संक्षेप में

5. तीन अपीलकर्ता, मैसर्स गैस्ट्रेड इंटरनेशनल, मैसर्स राजकमल इंडस्ट्रियल प्राइवेट लिमिटेड और मैसर्स डिविनिटी एलएमपेक्स ने संयुक्त अरब अमीरात से प्रति पोत "अल हीरा" समुद्र के माध्यम से माल का आयात किया, जिसे कांडला बंदरगाह पर डॉक किया गया

था। आयातकों ने माल को "बेस ऑयल एस. एन. 50" के रूप में घोषित किया और चैप्टर हेडिंग 27101960 के तहत इसकी मंजूरी मांगी, जो बेस ऑयल के लिए है। खुफिया रिपोर्ट के आधार पर, राजस्व खुफिया निदेशालय ("डी. आर. आई.") ने अध्याय शीर्षक 27101930 के तहत उक्त कार्गो को एच. एस. डी. के रूप में वर्गीकृत करते हुए उक्त कार्गो को जब्त कर लिया, जिसे केवल राज्य व्यापार उद्यमों को छोड़कर आयात करने से प्रतिबंधित किया गया है। आयात नीति आई. टी. सी. (एच. एस.), 2017 के अनुसार, उच्च गति वाले डीजल (एच. एस. डी.) और निम्न डीजल तेल (एल. डी. ओ.) को एक्जिम कोड 27101930 और 27101940 के तहत शामिल किया गया है और डी. जी. एफ. टी. वाणिज्य विभाग द्वारा जारी अधिसूचना दिनांक 20.05.2015 के तहत अधिसूचित नीति के संदर्भ में, इन वस्तुओं का आयात केवल राज्य व्यापार उद्यमों द्वारा किया जा सकता है, इसलिए अपीलकर्ताओं द्वारा नहीं। जब्त किए गए सामानों के नमूने वडोदरा में केंद्रीय उत्पाद शुल्क और सीमा शुल्क प्रयोगशाला को परीक्षण के लिए भेजे गए थे, जिसने इस निष्कर्ष के साथ 11.05.2018 पर रिपोर्ट वापस की कि जब्त किए गए सामानों से लिए गए नमूनों में 8 मापदंडों के संबंध में IS 1460:2005 के अनुरूप उच्च गति वाले डीजल तेल/स्वचालित ईंधन तेल की विशेषताएं थी, और यह कि नमूने "बेस ऑयल के अलावा अन्य" थे। अपीलकर्ता-आयातकों ने उक्त परीक्षण रिपोर्ट का विरोध किया और सीमा शुल्क अधिकारियों से केंद्रीय राजस्व नियंत्रण प्रयोगशाला (सी. आर. सी. एल.), नई दिल्ली या भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, देहरादून में नमूनों का पुनः परीक्षण करने का अनुरोध किया। तदनुसार, नमूने सी. आर. सी. एल. को भेजे गए।

6. केंद्रीय राजस्व नियंत्रण प्रयोगशाला, जिसे नमूने फिर से भेजे गए थे, ने भी इस निष्कर्ष के साथ 03.07.2018 दिनांकित एक रिपोर्ट प्रस्तुत की कि नमूने एच. एस. डी. तेल (मोटर वाहन) के विनिर्देशों के अनुरूप हैं। डीजल ईंधन) IS 1460:2005 के अनुसार:10 मापदंडों के संबंध में और प्रत्येक नमूना "बेस ऑयल के अलावा" है।
7. उपरोक्त परिणामों से असंतुष्ट, अपीलकर्ताओं में से एक, मैसर्स राजकमल इंडस्ट्रियल प्राइवेट लिमिटेड ने 2018 का एक विशेष नागरिक आवेदन संख्या 10882 दायर करके गुजरात उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाया, जिसमें उच्च न्यायालय ने 30.07.2018 पर एक अंतरिम आदेश पारित किया, जिसमें विभाग को इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड को आवश्यक मात्रा में नमूने भेजने का निर्देश दिया गया। (आई. ओ.

सी. एल.), मुंबई जो विभाग के परिपत्र दिनांक 16.11.2017 के अनुसार अधिसूचित प्रयोगशालाओं में से एक है।

8. तदनुसार नमूनों को मुंबई में इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड की केंद्रीय प्रयोगशाला में भेजा गया, जिसने 14.08.2018 दिनांकित रिपोर्ट प्रस्तुत की जिसमें कहा गया था कि नमूने का परीक्षण भारतीय मानक IS 1460:2005 के अनुसार किया गया था: और नमूना विनिर्देशन आई. एस. के संदर्भ में निर्धारित 21 मापदंडों में से प्रयोगशाला क्षमता के अनुसार 14 मापदंडों को पूरा करता है।
9. इसके बाद डी. आर. आई. ने अनुचित वर्गीकरण का आरोप लगाते हुए 24.04.2019 पर अपीलार्थियों को कारण दर्शाएँ नोटिस जारी किए। उक्त कारण दर्शाओ नोटिसों में, यह कहा गया था कि आयातित सामान सी. टी. एच. 27101930 के तहत एच. एस. डी. के रूप में वर्गीकृत किए जा सकते हैं, कि आयातित सामान सीमा शुल्क अधिनियम, 1962 की खंड 111 (डी) और (एम) के तहत जब्त किए जाने के लिए उत्तरदायी थे (संक्षेप में, "अधिनियम") और यह कि अधिनियम की खंड 112 (ए) और (बी) के तहत लगाए गए दंड के लिए उत्तरदायी हैं और अपीलकर्ता-कंपनियों के निदेशक भी खंड 112 (ए) और (बी), खंड 114एए और अधिनियम की खंड 117 के तहत लगाए गए दंड के लिए उत्तरदायी थे।

कारण दर्शाओ नोटिस में यह भी कहा गया है कि पहले के आयातों को सी. टी. एच. 27101940 के तहत हल्के डीजल तेल के रूप में वर्गीकृत किया जाना चाहिए था और इन्हें अधिनियम की खंड 111 (डी) और (एम) के तहत जब्त किया जाना चाहिए और अधिनियम की खंड 112 (ए) और (बी) और खंड 114एए के तहत जुर्माना लगाया जाना चाहिए।

अपीलकर्ता- गैस्ट्रेड इंटरनेशनल प्राइवेट लिमिटेड के संबंध में खरीदार को पहले के आयातित सामानों के बारे में कारण बताएँ नोटिस भी जारी किया गया था, जिसमें कहा गया था कि पहले के आयात सी. टी. एच. 27101940 के तहत एल. डी. ओ. थे और अधिनियम की खंड 111 (डी) और (एम) के तहत जब्त किए जाने के लिए उत्तरदायी थे और खंड 112 (बी) के तहत जुर्माना लगाया जा सकता था। उक्त वस्तुओं के निर्यातकों को कारण बताएँ नोटिस भी जारी किया गया था कि अधिनियम की धारा 112 (ए) और (बी), 114एए और 117 के तहत उन पर जुर्माना क्यों नहीं लगाया जाना चाहिए।

न्यायनिर्णायक प्राधिकरण द्वारा निष्कर्ष

10. पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत उत्तरों पर विचार करने और मौखिक और दस्तावेजी दोनों साक्ष्यों पर विचार करने के बाद, पक्षकारों पर भरोसा किया गया और पक्षकारों को सुनने के बाद, न्यायनिर्णायक प्राधिकरण, सीमा शुल्क के प्रधान आयुक्त, कस्टम हाउस, कांडला ने मूल आदेश सं. के. एन. डी.-सी. यू. एस. टी. एम.-000-सी. ओ. एम.-12-2019-20 दिनांक 05.12.2019, No. KND-CUSTOM-000-COM-12-2019-20.-KND CUSTOM-000-COM-13-2019-20 दिनांक 05.12.2019, और KND-CUSTOM 000-COM-14-2019-20 14-2019-20 दिनांक 05.12.2019, अपीलार्थियों के दावे को अस्वीकार करते हुए और विभागीय निष्कर्षों को बरकरार रखते हुए। न्यायनिर्णायक प्राधिकरण द्वारा की गई जांच और सुनवाई के दौरान, विशेषज्ञों में से एक, डॉ. गोबिंद सिंह, प्रबंधक (प्रयोगशाला), आईओसीएल केंद्रीय प्रयोगशाला, मुंबई की भी जांच की गई।
11. न्यायनिर्णायक प्राधिकरण ने निष्कर्ष निकाला कि प्रतिष्ठित तीन स्वतंत्र प्रयोगशालाओं के निष्कर्षों के अनुसार, नमूने IS 1460:2005 के तहत निर्दिष्ट मापदंडों को पूरा करते हैं: हाई-स्पीड डीजल, एक हाइड्रोकार्बन तेल के लिए निर्धारित और आयातक बेस ऑयल एस. एन. 50 के बारे में कोई प्रामाणिक या आधिकारिक साहित्य प्रस्तुत नहीं कर सके और इस प्रकार यह साबित करने में विफल रहे कि आयातित माल सीमा शुल्क अधिनियम, 1975 (संक्षेप में, "टैरिफ अधिनियम") के अध्याय 27101960 के तहत आने वाला बेस ऑयल था।
12. न्यायनिर्णायक प्राधिकरण ने अपीलार्थियों के इस तर्क को भी खारिज कर दिया कि चूंकि आईओसीएल ने IS 1460:2005, के लिए 22 मापदंडों में से केवल 14 का परीक्षण किया था: और इस प्रकार, सभी मापदंडों का परीक्षण नहीं किया गया था, यह नहीं कहा जा सकता है कि नमूना एचएसडी का है। यह भी अभिनिर्धारित किया गया कि अपीलार्थी यह इंगित नहीं कर सके कि यदि परीक्षण किया जाता है तो इन शेष आठ मापदंडों में से कौन सा संतुष्ट नहीं होगा।
13. तदनुसार, न्यायनिर्णायक प्राधिकरण ने अभिनिर्धारित किया कि माल अधिनियम की धारा 111 (डी) और (एम) के तहत ज़ब्त करने के लिए उत्तरदायी था। अपीलार्थियों के निदेशकों को अधिनियम की धारा 112 (ए) और 114ए के तहत दंड के लिए

उत्तरदायी ठहराया गया था। तथापि, अपीलार्थियों को जुर्माने के भुगतान पर पुनः निर्यात के लिए जब्त किए गए माल को भुनाने की अनुमति देना।

14. न्यायनिर्णायक प्राधिकरण द्वारा मूल रूप से पारित उपरोक्त आदेशों से व्यथित होने के कारण, अपीलकर्ताओं ने सीमा शुल्क सेवा कर अपीलीय न्यायाधिकरण (सी. ई. एस. टी. ए. टी.) के समक्ष अपील करना पसंद किया।

अपीलीय प्राधिकरण (सी. ई. एस. टी. ए. टी.) द्वारा निष्कर्ष

15. सी. ई. एस. टी. ए. टी. (CESTAT) के अनुसार, शुल्क अधिनियम में प्रदान की गई वैधानिक परिभाषा के अनुसार, जिसे सख्ती से समझने की आवश्यकता है, केवल ऐसा हाइड्रोकार्बन तेल जो भारतीय मानक विनिर्देश IS 1460:2005, के अनुरूप है: एच. एस. डी. के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। उक्त विनिर्देशन के अनुसार, 21/22 मापदंडों का उल्लेख किया गया है और इस प्रभाव के लिए कोई अपवाद प्रदान नहीं किया गया है कि यदि 21/22 मापदंडों में से किसी भी या कुछ मापदंडों को पूरा नहीं किया जाता है, तो भी उत्पाद को एचएसडी के रूप में निर्धारित किया जाएगा। सी. ई. एस. टी. ए. टी. के अनुसार, केवल ऐसा उत्पाद जो IS 1460:2005 में निर्दिष्ट सभी 21/22 मापदंडों को पूरा करता है, एच. एस. डी. के रूप में योग्य हो सकते हैं। सी. ई. एस. टी. ए. टी. ने कहा कि वर्तमान मामले में, चूंकि आठ मापदंडों का परीक्षण नहीं किया गया था, इसलिए यह नहीं कहा जा सकता है कि उत्पाद IS 1460:2005 के अनुरूप है, और यदि यह IS 1460:2005 के अनुरूप नहीं है, यह एच. एस. डी. की परिभाषा के अंतर्गत नहीं आता है जैसा कि अध्याय 27 के पूरक ध्यान दें के तहत प्रदान किया गया है।

सी. ई. एस. टी. ए. टी. ने यह भी माना कि वस्तुओं के वर्गीकरण को एच. एस. डी. के रूप में स्थापित करने का बोझ विभाग पर है, जो IS 1460:2005 के अनुरूप है, और सभी मापदंडों के परीक्षण की अनुपस्थिति में, यह विभाग की केवल एक धारणा हो सकती है कि 14 मापदंडों के आधार पर, एक उत्पाद को एच. एस. डी. के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है।

16. सी. ई. एस. टी. ए. टी. ने यह भी विचार रखा कि आई. ओ. सी. एल. प्रयोगशाला की परीक्षण रिपोर्ट निर्णायक नहीं है। सी. ई. एस. टी. ए. टी. की राय थी कि विशेषज्ञ डॉ. गोबिंद सिंह, जिनकी जांच की गई थी, ने यह नहीं माना था कि सामान के परीक्षण के लिए फ्लैश पॉइंट एक महत्वपूर्ण पैरामीटर है और वह फ्लैश पॉइंट के पैरामीटर के संबंध में कोई ठोस राय नहीं दे सकते थे। सी. ई. एस. टी. ए. टी. ने कहा कि आई. ओ. सी.

एल. के डॉ. गोबिंद सिंह द्वारा किए गए परीक्षण को यह निर्धारित करने के लिए निर्णायक नहीं माना जा सकता है कि उत्पाद एच. एस. डी. है। सी. ई. एस. टी. ए. टी. का विचार था कि वर्तमान मामले में परीक्षण किया गया फ्लैश प्वाइंट 93 डिग्री सेल्सियस से ऊपर था, इसलिए माल को एच. एस. डी. के रूप में वर्गीकृत नहीं किया जा सकता है। सी. ई. एस. टी. ए. टी. ने यह भी कहा कि विभाग ने पूर्व निर्धारित दिमाग से एच. एस. डी. के लिए माल का परीक्षण कराया था, जबकि उक्त माल का परीक्षण किया जाना चाहिए था कि क्या ये बेस ऑयल हैं या नहीं, और केवल जब बेस ऑयल के लिए मापदंडों को पूरा नहीं किया जाता है तो विभाग एच. एस. डी. या किसी अन्य वर्गीकरण के तहत माल को वर्गीकृत करने के लिए परीक्षण करने का सहारा ले सकता है।

17. सी. ई. एस. टी. ए. टी. ने कहा कि भले ही उत्पाद बेस ऑयल न हो, क्योंकि विभाग द्वारा यह संदेह से परे साबित नहीं किया गया था कि विवादित सामान एच. एस. डी. हैं, विभाग का मामला विफल हो जाएगा।
18. तदनुसार, सी. ई. एस. टी. ए. टी. ने अभिनिर्धारित किया कि माल सी. टी. एच. 27101930 के तहत एच. एस. डी. के रूप में वर्गीकृत नहीं हैं। नतीजतन, सी. टी. एच. 271019160 के तहत वस्तुओं को आधार तेल के रूप में वर्गीकृत करने के लिए अपीलकर्ताओं के दावे को बनाए रखा गया और अपीलकर्ताओं द्वारा किए गए प्रस्तुतिकरण को ध्यान में रखते हुए कि वर्गीकरण के निर्णय के बावजूद, वे फिर से निर्यात करने की अनुमति मांगेंगे, अपीलकर्ताओं को माल का फिर से निर्यात करने की अनुमति दी गई और सी. ई. एस. टी. ए. टी. ने 2020 की उपरोक्त सीमा शुल्क अपील No.10240,2020 की सीमा शुल्क अपील No.10291 और सीमा शुल्क विभाग द्वारा पारित एक सामान्य आदेश दिनांक 28.09.2021 के माध्यम से ज़बती, जुर्माना लगाने और मोचन जुर्माने के आदेश को दरकिनार कर दिया। 2020 की अपील No.10298।
19. सी. ई. एस. टी. ए. टी. (CESTAT) के उपरोक्त निर्णय से व्यथित होकर, विभाग ने गुजरात उच्च न्यायालय के समक्ष तीन अपीलों को प्राथमिकता दी, जिन्हें 2021 की राजस्व कर अपील No.297,2021 की राजस्व कर अपील संख्या 298 और 2021 की राजस्व कर अपील No.299 के रूप में पंजीकृत किया गया था, जिन्हें उच्च न्यायालय

द्वारा पारित एक सामान्य निर्णय और दिनांक 20.01.2022 के आदेश द्वारा अनुमति दी गई थी, जो अपीलों के इस समूह में चुनौती का विषय है।

उच्च न्यायालय द्वारा निष्कर्ष

20. उच्च न्यायालय के समक्ष, अधिनियम की खंड 130 के तहत अपीलों की स्थिरता का मुद्दा उठाया गया था, जिसका निर्णय विभाग के पक्ष में किया गया था। हालाँकि, अपीलकर्ताओं ने हमारे सामने इस मुद्दे को नहीं उठाया है और इस तरह हम निर्णय के बारे में कोई अवलोकन नहीं करते हैं, और हम केवल इस मुद्दे पर अपना विचार सीमित करते हैं कि क्या उच्च न्यायालय यह निष्कर्ष निकालने में सही था कि आयातित तेल आधार तेल नहीं है जैसा कि अपीलकर्ता-आयातकों द्वारा दावा किया गया है और विभाग द्वारा वर्गीकृत एचएसडी है।
21. उच्च न्यायालय ने कहा कि हालाँकि ऐसा प्रतीत होता है कि न्यायाधिकरण द्वारा जो निर्णय लिया गया था उसे तथ्य का प्रश्न कहा जा सकता है, और क्या विषय वस्तुएं एक श्रेणी या दूसरी श्रेणी में आती हैं, यह अनिवार्य रूप से तथ्य का प्रश्न होगा, फिर भी इसका निर्णय लेते समय, यदि न्यायाधिकरण मामले में लागू कानून के कुछ बुनियादी सिद्धांतों की अनदेखी करता है और निष्कर्षों को दर्ज करता है जिन्हें विकृत कहा जा सकता है, तो निश्चित रूप से न्यायाधिकरण का ऐसा निर्णय कानून के प्रश्न को जन्म देगा और इसलिए बनाए रखा जा सकता है।
- इसके बाद उच्च न्यायालय अभिलेख पर सामग्री की जांच करने के लिए आगे बढ़ा।
22. श्री गोबिंद सिंह, प्रबंधक (प्रयोगशाला), आई. ओ. सी. एल. केंद्रीय प्रयोगशाला, मुंबई के साक्ष्य पर आते हुए, उच्च न्यायालय ने कहा कि डॉ. गोबिंद सिंह के बयान और प्रतिपरीक्षा के एक सादे अध्ययन से संकेत मिलता है कि विशेषज्ञ ने बिना किसी अनिश्चितता के खुद को स्पष्ट कर दिया था कि किए गए सभी 14 परीक्षणों से केवल एक बात का पता चला कि नमूना तेज गति वाले डीजल का था, न कि बेस ऑयल का, जैसा कि मूल्यांकनकर्ताओं ने दावा किया था।

उच्च न्यायालय ने यह भी कहा कि विशेषज्ञ यह स्वीकार करने के लिए पर्याप्त ईमानदार था कि आई. ओ. सी. प्रयोगशाला केवल 14 परीक्षण करने के लिए सुसज्जित थी और उसके पास शेष सात परीक्षण करने की कोई सुविधा या साधन नहीं था। उच्च न्यायालय ने तब विचार किया कि क्या विश्लेषण को नमूने की प्रकृति के संबंध में पूर्ण या निर्णायक केवल तभी कहा जा सकता है जब सभी 21 परीक्षण किए गए हों, विशेष

रूप से जब विशेषज्ञ ने जोर देकर कहा था कि किए गए सभी 14 परीक्षणों ने केवल एक चीज का संकेत दिया था कि विश्लेषण किया गया नमूना उच्च गति वाले डीजल का था।

23. उच्च न्यायालय ने कहा कि यह विवाद में नहीं है कि यह स्थापित करने की जिम्मेदारी है कि नमूना विनिर्देश IS 1460:2005 को पूरा करता है सीमा शुल्क प्राधिकरण पर निर्भर करता है, और प्रमाण का भार प्राधिकरण पर यह दिखाने का है कि विचाराधीन विशेष वस्तु या वस्तु उनके द्वारा दावा किए गए तरीके से कर योग्य है। उच्च न्यायालय के अनुसार, उस संबंध में एक उचित निष्कर्ष दर्ज करने के लिए सामग्री होनी चाहिए और सामग्री या तो मौखिक या दस्तावेजी हो सकती है, और यह प्राधिकरण पर है कि वह न्यायनिर्णायक प्राधिकरण के समक्ष भी उस ओर से साक्ष्य रखे।
24. उच्च न्यायालय ने सीमा शुल्क कलेक्टर, मद्रास और अन्य बनाम डी. भूरमल, ए. आई. आर. 1974 एस. सी. 859; ए. एन. में इस न्यायालय के फैसलों पर भरोसा करते हुए कहा। गुहा एंड कंपनी बनाम कलेक्टर [1996 (86) ई. एल. टी. 333]; आर. वी. ई. वैकटचाला गौंडर बनाम अरुलमिगु विश्वेसरस्वामी और वी. पी. [1996 की सिविल अपील संख्या 10585 में दिनांकित 08.10.2003 आदेश] कि विभाग को अपने मामले को गणितीय सटीकता के साथ एक प्रदर्शन योग्य डिग्री तक साबित करने की आवश्यकता नहीं है और कानूनी प्रमाण आवश्यक रूप से एक सही प्रमाण नहीं है।
25. उच्च न्यायालय द्वारा यह कहा गया कि जब तक विभाग अपने मामले को इतनी प्रमुखता के साथ स्थापित करने में समर्थ रहा है, तब तक तथ्य का अस्तित्व साबित हो सकता है। उच्च न्यायालय ने कहा कि न्यायाधिकरण ने न्यायनिर्णायक प्राधिकरण द्वारा दर्ज किए गए निष्कर्षों में हस्तक्षेप करने का एकमात्र आधार यह था कि प्रयोगशालाएं सभी 21 परीक्षण करने की स्थिति में नहीं थीं। उच्च न्यायालय के अनुसार, न्यायाधिकरण ने इस तथ्य को नजरअंदाज कर दिया कि तीन अलग-अलग प्रयोगशालाओं में किए गए सभी परीक्षणों से केवल एक चीज का पता चला कि नमूने में एच. एस. डी. की विशेषताएँ दिखाई दीं। उच्च न्यायालय ने तब कहा कि यदि विभाग इस हद तक साक्ष्य देने में समर्थ था, तो इसके बाद यह स्थापित करने की जिम्मेदारी निर्धारिती पर स्थानांतरित कर दी गई कि इन परीक्षणों को इस तथ्य का निर्णायक नहीं कहा जा सकता है कि विषय वस्तु एच. एस. डी. है। हालांकि, मूल्यांकनकर्ताओं द्वारा ऐसा कोई प्रयास नहीं किया गया था।

26. उच्च न्यायालय ने आगे कहा कि वह न्यायाधिकरण द्वारा दर्ज किए गए निष्कर्षों से बिल्कुल भी सहमत नहीं है। उच्च न्यायालय ने अभिनिर्धारित किया कि यह कहा जा सकता है कि न्यायाधिकरण ने तीन अलग-अलग प्रयोगशालाओं की तीन परीक्षण रिपोर्टों के रूप में भौतिक साक्ष्य की अनदेखी की है, जिसमें नमूनों को विनिर्देशन IS 1460:2005 को पूरा करने के लिए प्रमाणित किया गया है, और निर्धारिती ऐसा कुछ भी नहीं दिखा पाए हैं जिसके आधार पर उच्च न्यायालय यह विचार रख सके कि यदि सभी निर्धारित 22 परीक्षण नहीं समर्थ जाते हैं, तो रिपोर्ट अधूरी रहेगी और साक्ष्य में स्वीकार्य नहीं होगी या नमूने की प्रकृति के बारे में निर्णायक नहीं होगी।
27. उच्च न्यायालय ने कहा कि यदि इन 14 परीक्षणों से नमूना एच. एस. डी. में से एक होने का संकेत मिलता है, तो इस साक्ष्य को केवल इस आधार पर खारिज, नजरअंदाज या अनदेखा नहीं किया जा सकता था कि इन सात परीक्षणों को करने के लिए पर्याप्त सुविधा की कमी के कारण प्रयोगशालाओं द्वारा सात अन्य परीक्षण नहीं किए जा सकते थे। उच्च न्यायालय के अनुसार, ऐसा कहने के लिए विभाग को अपने मामले को गणितीय सटीकता और उचित संदेह से परे साबित करने की आवश्यकता होगी। तदनुसार, उच्च न्यायालय ने विभाग द्वारा दायर अपीलों को स्वीकार कर लिया और सी. ई. एस. टी. ए. टी. के आदेश को रद्द कर दिया।

इस न्यायालय द्वारा विचार

28. न्यायनिर्णायक प्राधिकरण, अपीलीय प्राधिकरण (सी. ई. एस. टी. ए. टी.) और उच्च न्यायालय के उपरोक्त तीन निर्णयों से यह स्पष्ट है कि उनके निर्णय मुख्य रूप से तीन प्रयोगशालाओं, अर्थात् वडोदरा में केंद्रीय उत्पाद और सीमा शुल्क प्रयोगशाला, केंद्रीय राजस्व नियंत्रण प्रयोगशाला (सी. आर. सी. एल.), नई दिल्ली और केंद्रीय प्रयोगशाला, इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड, मुंबई की रिपोर्टों पर निर्भर थे, जहां प्रश्न किए गए सामानों के नमूने परीक्षण के लिए भेजे गए थे कि क्या ये भारतीय मानक ब्यूरो के भारतीय मानक विनिर्देशन के अनुरूप हैं। IS 1460:2005. तीनों मंचों ने डॉ. गोबिंद सिंह के विशेषज्ञ साक्ष्य का भी उल्लेख किया।
29. तीन अलग अलग लैबोरेटरी द्वारा किए गए टेस्ट के नतीजों के एक ही सेट पर तीनों फोरम द्वारा निकाले गए अलग-अलग नतीजों को देखते हुए, यह समझना ज़रूरी होगा कि ये फोरम अपने नतीजों तक कैसे पहुँचे, इसके लिए इन टेस्ट की जाँच करना ज़रूरी होगा।

30. चूंकि इन परीक्षाओं का संदर्भ बिंदु भारतीय मानक ब्यूरो, IS 1460:2005, का भारतीय मानक विनिर्देशन है जो टैरिफ अधिनियम के तहत एच. एस. डी. के लिए विनिर्देशों को निर्धारित करता है, इन तीन परीक्षाओं के परिणामों के प्रभावों की जांच करने और सही निष्कर्ष पर पहुंचने से पहले इन मापदंडों को संदर्भित करना आवश्यक होगा।
31. टैरिफ अधिनियम की खंड 2 उन दरों का प्रावधान करती है जिन पर टैरिफ अधिनियम की पहली और दूसरी अनुसूचियों में निर्दिष्ट सीमा शुल्क अधिनियम के तहत सीमा शुल्क लगाया जाएगा।

प्रशुल्क अधिनियम की पहली अनुसूची का अध्याय 27 खनिज ईंधन, खनिज तेल और उनके आसवन के उत्पादों, बिटुमिनस पदार्थों, खनिज मोम के संबंध में देय शुल्क की दर से संबंधित है।

अध्याय 27 के पूरक ध्यान दें की में एच. एस. डी. सहित विभिन्न प्रकार के तेलों की विशेषताओं को निर्दिष्ट किया गया है। तदनुसार, इस पूरक ध्यान दें की के प्रासंगिक भागों को आसान संदर्भ के लिए यहाँ पुनः प्रस्तुत किया गया है।

“पूरक टिप्पणियाँ:

इस अध्याय में निम्नलिखित अभिव्यक्तियों के अर्थ दिए गए हैं:

a) मोटर स्पिरिट का अर्थ है कोई भी हाइड्रोकार्बन तेल (कच्चे खनिज तेल को छोड़कर) जिसका फ्लैशप्वाइंट 250 डिग्री सेल्सियस से कम है और जो या तो स्वयं या किसी अन्य पदार्थ के साथ मिश्रण में, स्पार्क इग्निशन इंजन में ईंधन के रूप में उपयोग के लिए उपयुक्त है। “विशेष क्वथनांक स्पिरिट (उपशीर्षक 2710 12 11, 2710 12 12 और 2710 12 13) का अर्थ है हल्का तेल, जैसा कि अध्याय ध्यान दें 4 में परिभाषित किया गया है, जिसमें कोई एंटी-नॉक तैयारी नहीं है, और तापमान के बीच 600 डिग्री सेल्सियस से अधिक का अंतर नहीं है जिस पर 5 प्रतिशत और 90 प्रतिशत आयतन (नुकसान सहित) आसवन होता है।

b) “प्राकृतिक गैसोलीन तरल (एन. जी. एल.)” प्राकृतिक गैस से निकाला गया एक कम उबलता तरल पेट्रोलियम उत्पाद है।

c) “सुपीरियर केरोसिन ऑयल (SKO)” का मतलब है कोई भी हाइड्रोकार्बन तेल जो ब्यूरो ऑफ इंडियन स्टैंडर्ड के इंडियन स्टैंडर्ड स्पेसिफिकेशन IS: 1459-1974 (रीअफर्म्ड 1996) के मुताबिक हो;

d) "विमानन टरबाइन ईंधन (एटीएफ) "का अर्थ है भारतीय मानक ब्यूरो के भारतीय मानक विनिर्देश IS 1571:1992:2000 के अनुरूप कोई भी हाइड्रोकार्बन तेल

e) "हाई-स्पीड डीजल (एच. एस. डी.) "का अर्थ है भारतीय मानक ब्यूरो के भारतीय मानक विनिर्देश IS 1460:2005 के अनुरूप कोई भी हाइड्रोकार्बन तेल;

f) "हल्का डीजल तेल (एल. डी. ओ.)" का अर्थ है भारतीय मानक ब्यूरो के भारतीय मानक विनिर्देश IS:15770:2008; के अनुरूप कोई भी हाइड्रोकार्बन तेल

g) "ईंधन तेल का अर्थ है भारतीय मानक ब्यूरो के भारतीय मानक विनिर्देश IS:1593:1982 के अनुरूप कोई भी हाइड्रोकार्बन तेल (वर्ष 1997 में पुनः पुष्टि की गई);

h) "स्नेहक तेल का अर्थ है कोई भी तेल, जिसका उपयोग आमतौर पर स्नेहन के लिए किया जाता है, किसी भी हाइड्रोकार्बन तेल को छोड़कर, जिसका फ्लैश बिंदु 93.30 सेंटीग्रेड से नीचे है;

i) "जूट बैचिंग ऑयल "और" टेक्स्टाइल ऑयल "हाइड्रोकार्बन तेल हैं जिनका फ्लैश पॉइंट 93.30C पर या उससे ऊपर होता है, और आमतौर पर जूट या अन्य कपड़ा रेशों के बैचिंग के लिए उपयोग किया जाता है।

j) एसटीएम डी 1500 विधि द्वारा अभिव्यक्ति "पेट्रोलियम जेली कूड" (उपशीर्षक 2712 10 10)

k) इन अतिरिक्त नोट्स के प्रयोजनों के लिए, निर्धारित परीक्षणों का अर्थ एतद्वारा उन्हें सौंपा गया है

1) "फ्लैश पॉइंट" का निर्धारण पेट्रोलियम अधिनियम, 1934 (1934 का 30)

के तहत बनाए गए नियमों में इस संबंध में निर्धारित परीक्षण के अनुसार किया जाएगा;

2)

.....

5)

32. इस प्रकार, उच्च गति वाले डीजल (एच. एस. डी.) को भारतीय मानक ब्यूरो के भारतीय मानक विनिर्देशन आई. एस. के अनुरूप किसी भी हाइड्रोकार्बन तेल के रूप में परिभाषित किया गया है, IS:1460:2005.
33. भारतीय मानक ब्यूरो IS 1460:2005, के भारतीय मानक विनिर्देशन के संबंध में हाई स्पीड डीजल के संबंध में, प्रदान किए गए विनिर्देश इस प्रकार हैं:

यूरो IV/भारत चरण IV क्षतिपूर्ति मानदंड शिकायत- स्वचालित आहार ईंधन के लिए विशिष्टता

क्र. सं.	विशेषताएँ	आवश्यकताएँ	परीक्षण विधि [पी:] आईएस 1448/ ISO/एएसटीएम
(1)	(2)	(3)	(4)
(i)	अम्लता, अकार्बनिक	निल	[पी : 2]
ii)	अम्लता, कुल, मिलीग्राम KOH/g, अधिकतम	रिपोर्ट करने के लिए	[पी : 2]
iii)	ऐश, प्रतिशत द्रव्यमान द्वारा, अधिकतम	0.01	[पी : 4]/ISO 6245
(iv)	कार्बन अवशेष (रामस्बॉटम) ऑन 10 प्रतिशत अवशेष ¹), द्रव्यमान द्वारा प्रतिशत, अधिकतम	0.30	[पी : 8]/ISO 10370
v)	सीटेन संख्या, न्यूनतम	51 ²⁾	[पी : 9]/ISO 5165
vi)	सीटेन सूचकांक, न्यूनतम	46 ²⁾	डी 4737/ISO 4264
vii)	पोर प्वाइंट ³ अधिकतम:		[पी : 10]/डी 5949 या डी 5950 या डी 5985
	क) सर्दी	3° सी.	
	ख) ग्रीष्मकाल	15 सी.	

viii)	तांबे की पट्टी 3 एच के लिए जंग 50°सी.	उससे भी बुरा नहीं नंबर 1	[पी : 15]/ISO 2160
ix)	आसवन, प्रतिशत v/v, पर पुनर्प्राप्त किया गया 360°सी, न्यूनतम	95	[पी : 18]/ISO 3405
x)	फलैश बिंदु [*] :		
	a) आबेल, °C, न्यूनतम	35	[पी : 20]
	b) पेंस्की मार्टेंस बंद कप ⁴⁾ , °C, न्यूनतम	66	[पी : 21]
xi)	काइनेमेटिक विस्कोसिटी, सी. एस. टी., 40 डिग्री सेल्सियस पर	2.0 से 4.5 तक	[पी:25]/ISO 3104
xii)	तलछट, प्रतिशत द्रव्यमान के अनुसार, मैक्स	-	[पी: 30]
xiii)	कुल संदूषण, मिग्रा/किग्रा, अधिकतम	24	ईएन 12662
xiv)	15°C ⁵⁾ पर घनत्व, किग्रा/मी ³	820-845	[पी:16] या [पी: 32] ⁶⁾ /डी 4052/ ISO 3675 या ISO 12185
xv)	कुल सल्फर ⁷⁾ , मिलीग्राम / किग्रा, अधिकतम	50	ISO 20846 या ISO 20847 या ISO 20884/ [पी]:83]/डी 5453/डी 2622/डी 4294/ [पी: 34] ⁸⁾
xvi)	पानी की मात्रा, मिलीग्राम / किग्रा,	200	ISO 12937
xvii)	कोल्ड फ़िल्टर प्लगिंग बिन्दु (सी.एफ. पी. पी.) ³⁾ , अधिकतम:		[पी:110]/डी. 6371
	क) सर्दी	6°सी.	
	ख) ग्रीष्मकाल	18°सी.	
xviii)	ऑक्सीकरण स्थिरता ⁹⁾ ,	25	ISO 12205 या ASTM D

	जी/एम ³ , अधिकतम		2274 ⁹⁾
xix)	पॉलीसाइक्लिक सुगंधित हाइड्रोकार्बन (पी ए एच), द्रव्यमान द्वारा प्रतिशत, अधिकतम	11	IP 391 या EN 12916
xx)	चिकनाई ठीक की गई निशान व्यास पहनें (डब्ल्यू. एस. डी. 1.4) 60 डिग्री सेल्सियस पर, माइक्रोन, अधिकतम	460	ISO 12156-1 कोर 1
xxi)	ऑक्सीजन सामग्री ¹⁰⁾ , द्रव्यमान द्वारा प्रतिशत, अधिकतम	0.6	अनुलग्नक बी

- 1) यदि उपयोग किया जाता है तो यह सीमा इग्निशन इम्प्रोवर्स को जोड़ने से पहले लागू होती है। यदि बाजार में तैयार ईंधन पर सीमा से अधिक मूल्य प्राप्त किया जाता है, तो नाइट्रेट युक्त यौगिक की उपस्थिति स्थापित करने के लिए ASTM D 4046/ISO 13759 का उपयोग किया जाएगा। ऐसे मामले में कार्बन अवशेष के लिए वर्तमान सीमा लागू नहीं की जा सकती है। हालांकि, इग्निशन इम्प्रूवर का उपयोग निर्माता को योजकों को जोड़ने से पहले इस आवश्यकता को पूरा करने से छूट नहीं देता है।
- 2) असम कच्चे तेल से संसाधित ईंधन के लिए, सीटेन संख्या और सीटेन सूचकांक में 3 इकाइयों की छूट दी गई है।
- 3) भारत के मध्य और उत्तरी मैदानी इलाकों में (दोनों महीने सहित) नवंबर से फरवरी तक की अवधि सर्दी होगी और वर्ष के शेष महीनों को गर्मी कहा जाएगा।
- 4) नौसेना अनुप्रयोगों और मछली पकड़ने वाले जहाजों के लिए लागू है जिसके लिए उच्च फ्लैश ऑटोमोटिव डीजल ईंधन की आवश्यकता होती है।
- 5) असम के कच्चे तेल से संसाधित ईंधन के लिए, घनत्व सीमा को 820-855 तक शिथिल कर दिया गया है।

- 6) विवाद के मामले में, IS 1448 [P:32] रेफरी परीक्षण विधि होगी।
- 7) भारतीय नौसेना को आपूर्ति किए जाने वाले मोटर वाहन डीजल ईंधन के लिए, सल्फर की सीमा खरीदार और आपूर्तिकर्ता के बीच समझौते में होगी।
- 8) विवाद के मामले में, आईएस 1448 [पी:34] रेफरी परीक्षण विधि होगी।
- 9) यह परीक्षण केवल रिफाइनरी या निर्माता के छोर पर किया जाएगा। विवाद के मामले में, ASTM D 2274 रेफरी विधि होगी।
- 10) IS 15607 के अनुरूप 5 प्रतिशत (v/v) जैव-डीजल के साथ मिश्रित मोटर वाहन डीजल ईंधन के लिए ही यह लागू होगा और जैव-डीजल के विभिन्न मिश्रण प्रतिशत की अनुमति मिलने पर यह सीमा आनुपातिक रूप से भिन्न होगी।

.....

.....

34. यहाँ यह उल्लेख करना प्रासंगिक हो सकता है कि पेट्रोलियम अधिनियम, 1934 की खंड

2 (सी) के तहत फ्लैश पॉइंट को निम्नानुसार परिभाषित किया गया है:

“2 (ग) किसी भी पेट्रोलियम के 'फ्लैश-पॉइंट' का अर्थ है सबसे कम तापमान जिस पर यह एक वाष्प उत्पन्न करता है जो प्रज्वलित होने पर एक क्षणिक फ्लैश देगा, जो अध्याय II के प्रावधानों और उसके तहत बनाए गए नियमों के अनुसार निर्धारित किया जाता है।

35. अब हम तीन प्रयोगशालाओं द्वारा किए गए तीन परीक्षणों के परिणामों की जांच करेंगे,

जिन्हें निम्नानुसार पुनः प्रस्तुत किया गया है:-

1. वडोदरा में केंद्रीय उत्पाद शुल्क और सीमा शुल्क प्रयोगशाला।

रिपोर्ट दिनांकित 11.05.2018

लैब नं. आर. सी. एल./ए. एच./डी. आर. आई./216/07.05.2018

टैंक नं. 1.

रिपोर्ट

नमूना हल्के पीले रंग के तरल के रूप में है। यह निम्नलिखित विशेषताओं वाले खनिज हाइड्रोकार्बन तेल से बना है:-

1. फ्लैश प्वाइंट (पी. एम. सी. सी.) = 66° से ऊपर
2. ऐश सामग्री = शून्य
3. अम्लता = शून्य
4. जल की मात्रा = शून्य
5. 15° पर घनत्व = 0,8301 ग्राम/मिली
6. आसवन पुनर्प्राप्ति
 - a. 350° पर = 85 प्रतिशत से अधिक
 - b. 360° पर = 95 प्रतिशत से अधिक
7. 40° = 3.8 सीएसटी पर गतिज चिपचिपाहट
8. तलछट = निल

उपरोक्त विश्लेषणात्मक मापदंड को देखते हुए नमूने में उच्च गति वाले डीजल तेल/मोटर वाहन ईंधन तेल की विशेषताएँ हैं जो आईएस की पुष्टि करती हैं IS:1460:2005 और इसके बाद ऊपर उल्लिखित मापदंड 1 से 8 के संदर्भ में संशोधन किया गया।

यह बेस ऑयल के अलावा है।

मुहरबंद अवशेष लौटा दिए

प्रेषण संख्या 177

एसडी/-

तारीख:11.05.2018

11.05.2018

प्रदीप मारु
रासायनिक परीक्षक ग्रेड-II

देखा

दीपाली

02/07/2018

2. केंद्रीय राजस्व नियंत्रण प्रयोगशाला (सी. आर. सी. एल.), नई दिल्ली।

रिपोर्ट दिनांकित 03.07.2018

भारत सरकार

वित्त मंत्रालय राजस्व विभाग केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर और सीमा शुल्क बोर्ड केंद्रीय
राजस्व नियंत्रण प्रयोगशाला हिलसाइड रोड, पूसा, नई दिल्ली-110012

दूरभाष:011-21520123/25843494, फैक्स:011-25843495

ईमेल: dir.crcl-cbec@nic.in वेबसाइट में: [एचटीटीपी://सी.आर.सी.एल.गव.इन](http://सी.आर.सी.एल.गव.इन)

F.No.-27-Cus/C-05 से 14/2018-19

दिनांक:03.07.2018

सेवा में

अतिरिक्त निदेशक,

राजस्व खुफिया निदेशालय, अहमदाबाद जोआल इकाई,

नं. 15, मैग्नेट कॉर्पोरेट पार्क,

100 थलतेज-हेबतपुर रोड।

सोला फ्लाईओवर के पास, थलतेज,

अहमदाबाद-380054

विषय: बेस ऑयल एस. एन. 50- के रूप में घोषित नमूनों का परीक्षण

हेतु।

कृपया अपने पत्र F. No. DRIAZU/CI/ENQ-I2/2018 दिनांकित 06.06.2018 का संदर्भ लें। बी/ई सं. 6252179, 6251273, 6251276 से संबंधित आधार तेल एस. एन. 50 के रूप में वर्णित 10 नमूनों के साथ ऊपर उद्धृत विषय पर डी. आर. आई. ए. जेड. यू./सी. आई./ई. एन. Q.-एल. 06.06.2018 दिनांकित। 6251277, 6251258। 6251267। 6251268, 6252184, 6251270 और 6251278 सभी दिनांकित 04.05.2018 और TM नंबर 1A से 1OA दिनांकित 06.06.2018 पुनः परीक्षण के लिए।

यू/आर नमूनों को प्रयोगशाला संख्या सी. एल. आर.-05 से सी. एल. आर. 14 दिनांक 14.06.2018 के तहत पंजीकृत किया गया है।

नमूनों का विश्लेषण किया गया है और परीक्षण रिपोर्ट निम्नानुसार हैं:-

रिपोर्ट:-

दस नमूनों में से प्रत्येक हल्के पीले रंग के तरल के रूप में है। प्रत्येक खनिज हाइड्रोकार्बन तेल से बना है, जिसमें 70 प्रतिशत से अधिक खनिज हाइड्रोकार्बन तेल होता है और इसमें निम्नलिखित विशेषताएं होती हैं:-

नमूनों के परीक्षण परिणाम

लैब नं.		सीएल आर- 05	सीएल आर- 06	सीएल आर- 07	सीएल आर- 08	सीएल आर- 09	सीएल आर- 10	सीएल आर- 11	सीएल आर- 12	सीएल आर- 13	सीएल आर- 14
टी. एम. मो. विशेषता	सीमा के अनुसार IS 1460:2005 और संशोधित किया गया	1ए.	2ए.	3ए.	4ए.	5ए.	6ए.	7ए.	8ए.	9ए.	10ए.
अम्लता/अकार्बनिक अम्लता, कुल मिलीग्राम केओएच/जी द्रव्यमान के हिसाब से राख प्रतिशत कार्बन अवशेष (रामक्स नीचे) पर 10% पुनः भुगतान प्रतिशत द्रव्यमान द्वारा	निल रिपोर्ट करने के लिए 0.01 (मैक्स।) 0.30 (मैट) 0.8200 0.8450	निल 0.05 निल 0.01 0.8287	निल 0.05 निल 0.01 0.8316	निल 0.05 निल 0.01 0.8310	निल 0.05 निल 0.01 0.8288	निल 0.05 निल 0.01 0.8284	निल 0.05 निल 0.01 0.8286	निल 0.05 निल 0.01 0.8286	निल 0.05 निल 0.01 0.8282	निल 0.05 निल 0.01 0.8284	निल 0.05 निल 0.01 0.8281
15 डिग्री सेल्सियस पर घनत्व फ्लैश प्वाइंट (पीएमसीसी)	66° (मिन.)	113° सी.	115° सी.	93° सी.	88° सी.	98° सी.	100° सी	95° सी.	78° सी.	106° सी.	111° सी.
काइनेमेटिक 40°सी. सी. एस. आई. काइनेमेटिक विस्कोसिटी 37.8°सी.	2.0 4.5 तक -	3.7 4.3	4.4 4.9	4.4 4.8	4.4 4.7	4.0 4.7	3.9 4.3	3.5 4.3	4.1 4.3	4.0 4.3	4.0 4.3
आसवन सीमा, °C	95	238- 356	234- 358	234- 352	238- 354	240- 356	238- 344	240- 354	240- 350	240- 342	238- 325
प्रतिशत वी/वी 360 डिग्री सेल्सियस पर ठीक किया गया 95% मात्रा पुनर्प्राप्त किया गया	356° सी.	358°सी	352°सी	354°सी	356°सी	344°सी	354°सी	350°सी	342°सी	325°सी	
पोर प्वाइंट, मैक्स (a) शरद काल ख) ग्रीष्मकाल	3°सी. 15°सी	8°सी	8°सी	8°सी	8°सी	8°सी	8°सी	8°सी	8°सी	8°सी	8°सी
केटाइल सूचकांक पानी की मात्रा, प्रतिशत वी/वी मिलीग्राम/किया	46 (मिन.) 200 (मैक्स)	65.7 निल	66.0 निल	65.6 निल	66.2 निल	66.0 निल	66.5 निल	66.6 निल	66.6 निल	67.0 निल	67.7 निल

उपरोक्त विश्लेषणात्मक मापदंडों के आधार पर, दस नमूनों में से प्रत्येक उच्च गति वाले डीजल तेल/(IS:1460:2005 के अनुसार मोटर वाहन डीजल ईंधन और आगे संशोधित) के विनिर्देशों के अनुरूप है।

प्रत्येक बेस ऑयल से अलग है।

मुहरबंद अवशेष अलग से वापस कर दिए जाते हैं।

एसडी/-

03.07:2018

(के सी अग्रवाल)

संयुक्त निदेशक

प्रतिलिपि : रासायनिक परीक्षक जीआर-1 (आई/ई) केंद्रीय उत्पाद शुल्क और सीमा शुल्क प्रयोगशाला, वडोदरा।

3. केंद्रीय प्रयोगशाला, इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड, मुंबई।

रिपोर्ट दिनांकित 14.08.2018

इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड

केंद्रीय प्रयोगशाला

“के” ऑयल एच स्थापना सेवरी (पूर्व), मुंबई-400 015

टेलीफैक्स 02222416 3062 (डी) 022 2292 4761

विपणन प्रभाग

उच्च गति के लिए गुणवत्ता नियंत्रण परीक्षण रिपोर्ट

विशिष्टता सं।	IS1460-2005 संशोधित संख्या 2 मार्च 2010
परीक्षण आवश्यक है	उच्च गति डीजल विश्लेषण
परीक्षण रिपोर्ट संख्या और तिथि	LSE/3791/2018 दिनांकित 14/08/2013
ग्राहक का नाम	निदेशालय 01 राजस्व इंटेलिजेंस, अहमदाबाद
नमूने का स्रोत	7एस (समग्र), पोत एम. टी. एएल हीरा
खींचा नमूना	प्रतिनिधि द्वारा संयुक्त रूप से डीआरआई, अहमदाबाद
सील नं.	शीशे की बोतल को लीड सील (पंच के हस्ताक्षर के साथ पीला टैग) के साथ सील किया गया है।
नमूना लेने की तिथि	05/05/2018
नमूना प्राप्त होने की तिथि	09/08/2018
जाँच का कारण	पत्र रेफरी के अनुसार। DRI/AZU/CI/ ENQ-12(INT

02/2018/2018: दिनांकित 08/08/2018। "बेस ऑयल एस. एन. 50-आई. एन. बल्क" के रूप में घोषित वस्तुओं का उच्च गति डीजल विनिर्देश IS 1460:2005 के अनुसार परीक्षण किया जाएगा: संशोधित किया गया।

एस. एल. न.	विशेषताएँ	आवश्यकताएँ	परीक्षण विधि (पी) आईएस का:1448/ ISO/एएसटीएम	परिणाम
I.	अम्लता, अकार्बनिक	निल	पी:2.	मिल
II.	अम्लता, कुल, मिलीग्राम KOH/g, अधिकतम	रिपोर्ट करने के लिए	पी:2.	0.06
III	राख, द्रव्यमान द्वारा प्रतिशत, अधिकतम	0.01	पी:4	0.002
IV	कार्बन अवशेष (रैम्स) नीचे) 10 प्रतिशत पर अवशिष्ट, प्रतिशत द्वारा द्रव्यमान, मैक्स	0.30	पी:8	0.03
V	सीटेन संख्या, न्यूनतम।	51	पी:9	FNA
VI	सीटेन सूचकांक, न्यूनतम	46	डी-4737	66.9
VII	पोर प्वाइंट, मैक्स: (क) सर्टी/(ख) गर्मी	3°C/15 °C	पी:10	3
VIII	तांबा पट्टी जंग 50 डिग्री सेल्सियस पर 3 घंटे के लिए	से बुरा नहीं नं. 1	पी:15	1ए
IX	आसवन,% v/v, 360 "सी पर बरामद किया गया, न्यूनतम	95	पी:18	95
X	फ्लैश प्वाइंट: a) आबेल °C न्यूनतम b) पेंस्की मार्टेस बंद कप, °C, न्यूनतम	35 66	पी: 20 पी: 21	--112
XI	काइनेमेटिक विस्कोसिटी, सीएसटी, 40 डिग्री सेल्सियस पर	2.0 से 4.5	पी:25	3.997
XII	तलछट, प्रतिशत द्वारा द्रव्यमान, मैक्स	-	पी:30	0.02
XIII	कुल प्रदूषण, मिग्रा/किग्रा,	24	ईएन 12662	FNA

	अधिकतम			
XIV	15 डिग्री सेल्सियस पर घनत्व, किग्रा/मी ³	820-845	पी:16	829.5
XV	कुल सल्फर, मिलीग्राम/किग्रा, अधिकतम	50	डी-4294	37
XVI	पानी की मात्रा, मिलीग्राम/किग्रा, अधिकतम	200	ISO-12937	75
XVII	कोल्ड फ़िल्टर प्लगिंग बिंदु डिग्री सेल्सियस (सी. एफ. पी. पी.), अधिकतम, (क) सर्दी/(ख) गर्मी	6°सी/18 °सी	पी:110	FNA
XVIII	ऑक्सीकरण स्थिरता, जी / m ³	25	ISO:12205	FNA
XIX	पॉलिसीक्लिक सुगंधित हाइड्रोकार्बन (पीएच),% एम, मैक्स	11	आईपी-391	FNA
XX	चिकनाई ठीक की गई स्कार दिया @पहने 60°सी, माइक्रोन, अधिकतम	460	ISO:12156-1	FNA
XXI	ऑक्सीजन सामग्री,% m, अधिकतम	0.6	एनेक्स. बी -	FNA

अनुस्मारक:

- 1.FNA इसका अर्थ है "सुविधा उपलब्ध नहीं"
- 2.फ्लैश प्वाइंट परीक्षण सबसे पहले एबेल उपकरण द्वारा किया गया था, लेकिन चूंकि यह 66 डिग्री सेल्सियस से अधिक था, इसलिए यह पीएमसीसी द्वारा किया गया था।
- 3.जैसा कि आपके पत्र नं. डी. आर. 1/ए. जेड. यू./सी. आई./ई. एन. Q.-एल. 2 (आई. एन. टी.-02/2018)/2018 दिनांक 08/08/2018 के बिंदु संख्या 6 में बताया गया है गुजरात के माननीय उच्च न्यायालय के आदेश के अनुसार। इस नमूने का परीक्षण भारतीय मानक 15 के अनुसार किया गया है:1460:2005 जैसा कि संशोधित किया गया है और इस विनिर्देश के तहत कुल XXI परीक्षण शामिल हैं जिनमें से हमारे पास है हमारी प्रयोगशाला क्षमता के अनुसार केवल XIV मापदंडों का परीक्षण किया गया।

4. यह नमूना विनिर्देशन IS1460:2005, के अनुसार हमारी प्रयोगशाला में परीक्षण किए गए केवल XIV मापदंडों के विनिर्देशन को पूरा करता है । संशोधित ।

नोट

1. यह परीक्षण रिपोर्ट केवल परीक्षण के लिए प्रस्तुत विशेष नमूने को संदर्भित करती है। परिणाम प्राप्त नमूने से संबंधित हैं।
2. इस परीक्षण रिपोर्ट को प्रयोगशाला की लिखित मंजूरी के बिना पूरी तरह से पुनः प्रस्तुत नहीं किया जाएगा।
3. प्रपत्र सं: क्यूएफ/ओपीएन/07
4. रिपोर्ट किए गए परीक्षण के परिणाम परीक्षण के समय और बताई गई शर्तों के तहत मान्य हैं।

--- - परीक्षण रिपोर्ट का अंत-----

द्वारा परीक्षण किया गया

एसडी/-

डॉ. गोबिंद सिंह

प्रबंधक (प्रयोगशाला)।

इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड।

14.08.2018

द्वारा समीक्षा की गई

एसडी/-

14.08.2018

36. उपरोक्त तीन परीक्षण परिणामों के अलावा, तीनों मंचों ने संबंधित निष्कर्षों पर पहुंचने के दौरान विशेषज्ञ डॉ. गोबिंद सिंह, प्रबंधक (प्रयोगशाला), आईओसीएल केंद्रीय प्रयोगशाला, मुंबई के साक्ष्य का भी विशेष रूप से उनकी प्रतिपरीक्षा के लिए उल्लेख किया था। इसलिए, नीचे दिए गए समान पुनरुत्पादन करना उचित हो सकता है:

- (i) मैसर्स राजकमल इंडस्ट्रियल प्राइवेट लिमिटेड के कहने पर श्री सिंह से जिरह इस प्रकार है:

“(सीमा शुल्क के प्रधान आयुक्त के समक्ष, कस्टम हाउस, कांडला)

श्री गोबिंद सिंह, प्रबंधक (प्रयोगशाला), आई. ओ. सी. एल., केंद्रीय प्रयोगशाला, मुंबई द्वारा मेसर्स राजकमल इंडस्ट्रियल प्राइवेट लिमिटेड और अन्य को जारी किए गए SCN F, No.DRI/AZU/CI/INQ-12 (INT-2/2018 दिनांक 22.04.2019 के मामले में प्रतिपरीक्षा। श्री हार्दिक मोध, अधिवक्ता द्वारा

सवाल: आपका नाम क्या है?

जवाब: डॉ. गोबिंद सिंह।

सवाल: आप कहाँ और कितने समय से काम कर रहे हैं?

जवाब: मैं 2012 से मुम्बई के सेवरी में आई. ओ. सी. एल. में काम कर रहा हूँ।

सवाल: पेट्रोलियम उत्पादों के संबंध में आपने कितने नमूनों का परीक्षण किया है?

जवाब: मैंने सैकड़ों नमूनों में बड़ी संख्या में नमूनों का परीक्षण किया है।

सवाल: क्या आप डी. आर. आई. के सहायक निदेशक द्वारा दिनांकित 04.08.2018 पत्र से अवगत हैं जिसमें श्री विवेक डब्ल्यू. सावंत, डी. जी. एम., आई. ओ. सी. एल. से IS 1460:2005, के तहत निर्धारित मापदंडों के अनुसार परीक्षण ज्ञापन के तहत अनुरोध के अनुसार नमूनों का परीक्षण करने का अनुरोध किया गया था: "हाई स्पीड डीजल" के लिए और माल की पहचान को वर्गीकृत करने के लिए। क्या आपने इन वस्तुओं का परीक्षण केवल यह पता लगाने के लिए किया था कि क्या भारतीय मानक IS 1460:2005, के तहत निर्धारित मापदंड हैं, हाई स्पीड डीजल के लिए?

जवाब: हाँ।

सवाल: दिनांकित 04.08.2018 पत्र के अनुसार, आपसे यह सत्यापित करने का अनुरोध किया गया था कि क्या नमूने IS 1460:2005, के अनुसार एचएसडी थे: क्या आपने इन निर्देशों का पालन किया है?

जवाब: हाँ।

सवाल: क्या आपने दिनांकित 22.04.2019 के कारण दिखाएँ नोटिस के लिए "दस्तावेजों पर निर्भर" के साथ संलग्न परीक्षण रिपोर्टों पर एस आर न.25 के रूप में हस्ताक्षर किए हैं?

जवाब: हाँ।

सवाल: 'द्वारा समीक्षा' का क्या अर्थ है?

जवाब: नमूनों का मेरे द्वारा परीक्षण किया गया और प्रयोगशाला में मेरे वरिष्ठ द्वारा जाँच, पर्यवेक्षण और हस्ताक्षर किए गए।

सवाल: IS 1460:2005 की तालिका यह सुनिश्चित करने के लिए कि नमूना एच. एस. डी. के मानदंडों को पूरा करता है या नहीं, कुल 22 मापदंडों का परीक्षण किया जाना है।

जवाब: नमूना विनिर्देशन IS 1460:2005 के साथ पूरा होता है हमारी प्रयोगशाला में परीक्षण किए गए मापदंडों के लिए जो हमारी प्रयोगशाला क्षमताओं के अनुसार परीक्षण किए गए 14 मापदंड हैं।

सवाल: क्या इसका मतलब यह है कि अन्य 8 मापदंड यह पता लगाने या यह तय करने के लिए महत्वपूर्ण नहीं हैं कि नमूना एच. एस. डी. के मानदंडों को पूरा करता है या नहीं?

जवाब: पहले से ही रिपोर्ट में प्रदान किया गया है कि प्रयोगशाला में नमूनों का परीक्षण IS 1406:2005 के अनुसार किया गया था और केवल 14 मापदंडों के परीक्षण के लिए सुविधा उपलब्ध है और शेष 8 मापदंडों के लिए, सुविधा उपलब्ध नहीं है जिसके लिए मैं टिप्पणी नहीं कर सकता।

सवाल: क्या आप IS1406:2005, के तहत प्रदान किए गए 8 मापदंडों के कार्य/विशेषताओं को जानते हैं जिनका परीक्षण नहीं किया गया है?

जवाब: चूंकि 8 मापदंडों का परीक्षण नहीं किया गया है, इसलिए मैं इन मापदंडों के संबंध में टिप्पणी नहीं कर सकता।

सवाल: रिपोर्ट के अवलोकन पर, क्या आपने निष्कर्ष निकाला है कि यह IS1460:2005, के उच्च गति वाले डीजल के मानदंडों को पूरा करता है?

जवाब: फिर से, यह रिपोर्ट में प्रस्तुत किया गया है कि IS1406:2005, के अनुसार 14 मापदंडों के लिए नमूनों का परीक्षण किया गया है, प्रयोगशाला में जो स्वयं उच्च गति वाले डीजल के लिए है?

सवाल: फ्लैश प्वाइंट के संबंध में, दो विधियाँ निर्धारित की गई हैं, एबेल के साथ-साथ पीएमसीसी। परीक्षण रिपोर्ट की टिप्पणी संख्या 2 में कहा गया है कि फ्लैश प्वाइंट का परीक्षण एबेल उपकरण विधि द्वारा किया गया था, लेकिन चूंकि यह 66 डिग्री सेल्सियस से अधिक था, इसलिए पीएमसीसी द्वारा नमूने का परीक्षण किया गया था। किस स्थिति में एच. एस. डी. के नमूने का परीक्षण एबेल विधि और पी. एम. सी. सी. विधि से किया जाना आवश्यक है?

जवाब: यदि तापमान 66 डिग्री सेल्सियस से ऊपर है तो पीएमसीसी की आवश्यकता होती है और यदि तापमान 66 डिग्री सेल्सियस से कम है तो इसे समर्थ विधि के साथ करना आवश्यक है।

सवाल: क्या आपको लगता है कि एच. एस. डी. पर विचार करने के लिए एक तत्व फ्लैशप्वाइंट है?

जवाब: सामग्री पर टिप्पणी नहीं कर सकते। मानक में निर्धारित फ्लैश प्वाइंट 35 डिग्री सेल्सियस के लिए न्यूनतम तापमान। हमने रिपोर्ट जमा कर दी है।

सवाल: एच. एस. डी. के रूप में नमूने पर विचार करने के लिए अधिकतम और न्यूनतम फ्लैशप्वाइंट क्या है?

जवाब: केवल न्यूनतम सीमा के बारे में बात की जाती है जो 35 डिग्री सेल्सियस है और मानक में कोई अधिकतम सीमा निर्धारित नहीं है।

सवाल: यदि मामला, फ्लैश प्वाइंट 100 डिग्री सेल्सियस, 150 डिग्री सेल्सियस, 200 डिग्री सेल्सियस आदि से अधिक है, तो क्या यह अभी भी एचएसडी मानक से संबंधित है?

जवाब: फ्लैश प्वाइंट जो भी हो, 35 डिग्री सेल्सियस से ऊपर टिप्पणी नहीं कर सकते, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।

सवाल: सीमा शुल्क शुल्क अधिनियम के अध्याय 27 के पूरक ध्यान दें के बिंदु संख्या 1 में प्रावधान है कि "जूट बैचिंग" तेल, "वस्त्र तेल" हाइड्रोकार्बन तेल हैं, जिनके फ्लैश बिंदु 93 डिग्री सेल्सियस पर और

उससे ऊपर होते हैं। यदि फ्लैश बिंदु 93 डिग्री सेल्सियस से अधिक होता है, तो आप इसे क्या कहते हैं?

जवाब: टिप्पणी नहीं कर सकते। फ्लैशप्वाइंट एकमात्र पैरामीटर नहीं है। हमने IS 1460:2005, के अनुसार हमें प्रस्तुत किए गए नमूनों का परीक्षण किया है

सवाल: आई. ओ. सी. एल. विभिन्न पक्षों को एच. एस. डी. की आपूर्ति करता है। क्या आपने कभी ऐसी स्थिति का सामना किया है जिसमें आपको 93 डिग्री सेल्सियस से ऊपर की इन सभी परीक्षण रिपोर्टों का फ्लैश प्वाइंट मिला हो और इसे एच. एस. डी. माना गया हो?

जवाब: फ्लैश प्वाइंट एकमात्र पैरामीटर नहीं है जिसका उपयोग IS 1460:2005, के अनुसार नमूने को मापने के लिए किया जाता है

सवाल: क्या आप कह सकते हैं कि यह एक मोटर वाहन डीजल है?

जवाब: प्रयोगशाला रिपोर्ट में पहले से ही लिखा गया है और हमने IS 1460:2005, के अनुसार मापदंडों के अनुसार नमूनों का परीक्षण किया है."

(ii) मेसर्स गैस्ट्रेड इंटरनेशनल के कहने पर श्री सिंह से जिरह इस प्रकार है:

"(सीमा शुल्क के प्रधान आयुक्त के समक्ष, कस्टम हाउस, कांडला)

श्री गोविंद सिंह, प्रबंधक (प्रयोगशाला), आई. ओ. सी. एल., केंद्रीय प्रयोगशाला, मुंबई की एस. सी. एन. एफ. नं. डी. आर. आई./ए. जेड. यू./सी. आई./ई. एन. Q.-11 (आई. एन. टी.-2/2018 दिनांक 24.04.2019 मेसर्स गैस्ट्रेड इंटरनेशनल और अन्य को श्री हार्दिक मोध, अधिवक्ता द्वारा जारी किया गया।

सवाल: आपका नाम क्या है?

जवाब: डॉ. गोबिंद सिंह।

सवाल: आप कहाँ और कितने समय से काम कर रहे हैं?

जवाब: मैं 2012 से मुंबई के सीवरी में IOCL में काम कर रहा हूँ।

सवाल: पेट्रोलियम उत्पादों के संबंध में आपने कितने नमूनों का परीक्षण किया है?

जवाब: मैंने सैकड़ों नमूनों में बड़ी संख्या में नमूनों का परीक्षण किया है।

सवाल: क्या आप डी. आर. आई. के सहायक निदेशक द्वारा दिनांकित 04.08.2018 पत्र से अवगत हैं जिसमें श्री विवेक डब्ल्यू. सावंत, डी. जी. एम., आई. ओ. सी. एल. से IS 1460:2005, के तहत निर्धारित मापदंडों के अनुसार परीक्षण जापन के तहत अनुरोध के अनुसार नमूनों का परीक्षण करने का अनुरोध किया गया था "हाई स्पीड डीजल" के लिए और माल की पहचान को वर्गीकृत करने के लिए। क्या आपने इन वस्तुओं का परीक्षण केवल यह पता लगाने के लिए किया था कि क्या भारतीय मानक IS 1460:2005, के तहत निर्धारित मापदंड हैं, हाई स्पीड डीजल के लिए?

जवाब: हाँ।

सवाल: दिनांकित 04.08.2018 पत्र के अनुसार, आपसे यह सत्यापित करने का अनुरोध किया गया था कि क्या नमूने IS 1460:2005, के अनुसार एचएसडी थे, क्या आपने इन निर्देशों का पालन किया है?

जवाब: हाँ।

सवाल: क्या आपने दिनांकित 24.04 2019 के कारण दिखाएँ नोटिस के लिए एस आर न. 14 पर दस्तावेजों पर निर्भर के साथ संलग्न परीक्षण रिपोर्टों पर हस्ताक्षर किए हैं?

जवाब: हाँ।

सवाल: 'द्वारा समीक्षा' का क्या अर्थ है?

जवाब: नमूनों का मेरे द्वारा परीक्षण किया गया और प्रयोगशाला में मेरे वरिष्ठ द्वारा जाँच, पर्यवेक्षण और हस्ताक्षर किए गए।

सवाल: IS 1480:2005, की तालिका यह सुनिश्चित करने के लिए कि नमूना एच. एस. डी. के मानदंडों को पूरा करता है या नहीं, कुल 22 मापदंडों का परीक्षण किया जाना है।

जवाब: नमूना विनिर्देशन IS 1460:2005, के साथ पूरा होता है हमारी प्रयोगशाला में परीक्षण किए गए मापदंडों के लिए जो हमारी प्रयोगशाला क्षमताओं के अनुसार परीक्षण किए गए 14 मापदंड हैं।

सवाल: क्या इसका मतलब यह है कि अन्य मापदंड यह पता लगाने या यह तय करने के लिए महत्वपूर्ण नहीं हैं कि नमूना एच. एस. डी. के मानदंडों को पूरा करता है या नहीं?

जवाब: पहले से ही प्रदान की गई रिपोर्ट में कहा गया है कि प्रयोगशाला में नमूनों का परीक्षण IS 1460:2005, के अनुसार किया गया था, और केवल 14 मापदंडों के परीक्षण के लिए सुविधा उपलब्ध है और शेष 8 मापदंडों के लिए, सुविधा उपलब्ध नहीं है जिसके लिए मैं टिप्पणी नहीं कर सकता।

सवाल: क्या आप IS 1406:2005, के तहत प्रदान किए गए 8 मापदंडों के कार्य/विशेषताओं को जानते हैं, जिनका परीक्षण नहीं किया गया है?

जवाब: चूंकि 8 मापदंडों का परीक्षण नहीं किया गया है, इसलिए मैं इन मापदंडों के संबंध में टिप्पणी नहीं कर सकता।

सवाल: रिपोर्ट के अवलोकन पर, क्या आपने यह निष्कर्ष निकाला है कि यह IS 1460:2005, के उच्च गति वाले डीजल के मानदंडों को पूरा करता है?

जवाब: फिर से, यह रिपोर्ट में प्रस्तुत किया गया है कि आईएस 1406; 2005 के अनुसार 14 मापदंडों के लिए नमूनों का परीक्षण प्रयोगशाला में किया गया है जो स्वयं उच्च गति वाले डीजल के लिए है।

सवाल: फ्लैश प्वाइंट के संबंध में, दो विधियाँ निर्धारित की गई हैं, एबेल के साथ-साथ पीएमसीसी। परीक्षण रिपोर्ट की टिप्पणी संख्या 2 में कहा गया है कि फ्लैश पॉइंट का परीक्षण एबेल उपकरण विधि द्वारा किया गया था, लेकिन चूंकि यह 66 डिग्री सेल्सियस से अधिक था, इसलिए पीएमसीसी द्वारा नमूने का परीक्षण किया गया था। किस स्थिति में एच. एस. डी. के नमूने का परीक्षण एबेल विधि और पी. एम. सी. सी. विधि से किया जाना आवश्यक है?

जवाब: यदि तापमान 66 डिग्री सेल्सियस से ऊपर है तो पीएमसीसी की आवश्यकता होती है और यदि तापमान 66 डिग्री सेल्सियस से कम है तो इसे समर्थ विधि के साथ करना आवश्यक है।

सवाल: क्या आपको लगता है कि एच. एस. डी. पर विचार करने के लिए सामग्री में से एक फ्लैशप्वाइंट है?

जवाब: सामग्री पर टिप्पणी नहीं कर सकते। मानक में निर्धारित फ्लैश प्वाइंट 35 डिग्री सेल्सियस के लिए न्यूनतम तापमान। हमने रिपोर्ट जमा कर दी है।

सवाल: एच. एस. डी. के रूप में नमूने को देखते हुए अधिकतम और न्यूनतम फ्लैशप्वाइंट क्या है?

जवाब: केवल न्यूनतम सीमा के बारे में बात की जाती है जो 35 डिग्री सेल्सियस है और मानक में कोई अधिकतम सीमा निर्धारित नहीं है।

सवाल: अगर फ्लैश पॉइंट 100 °C, 150 °C, 200 °C वगैरह से ज्यादा हो जाता है तो क्या यह अभी भी 10 एचएसडी मानक से संबंधित है?

जवाब: फ्लैश प्वाइंट जो भी हो, 35 डिग्री सेल्सियस से ऊपर टिप्पणी नहीं कर सकते, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।

सवाल: प्वाइंट नं. 1 सीमा शुल्क अधिनियम के अध्याय 27 के पूरक ध्यान दें। मैं कहा गया है कि "जूट बैचिंग ऑयल", "टेक्सटाइल ऑयल" हाइड्रोकार्बन तेल हैं, जिनके फ्लैश पॉइंट 93 डिग्री सेल्सियस पर और उससे ऊपर हैं। यदि फ्लैश पॉइंट 93 डिग्री सेल्सियस से अधिक है, तो आप इसे क्या कहते हैं?

जवाब: टिप्पणी नहीं कर सकते। फ्लैशप्वाइंट एकमात्र पैरामीटर नहीं है। हमने IS 1460:2005, के अनुसार हमें प्रस्तुत किए गए नमूनों का परीक्षण किया है।

सवाल: आई. ओ. सी. एल. विभिन्न पक्षों को एच. एस. डी. की आपूर्ति करता है। क्या आपने कभी ऐसी स्थिति का सामना किया है जिसमें आपको 93 डिग्री सेल्सियस से ऊपर की इन सभी परीक्षण रिपोर्टों का फ्लैश प्वाइंट मिला हो और इसे एच. एस. डी. माना गया हो?

जवाब: फ्लैश प्वाइंट एकमात्र पैरामीटर नहीं है जिसका उपयोग IS 1460:2005, के अनुसार नमूने को मापने के लिए किया जाता है।

सवाल: क्या आप कह सकते हैं कि यह एक मोटर वाहन डीजल है?

जवाब: प्रयोगशाला रिपोर्ट में पहले से ही लिखा गया है और हमने IS 1460:2005, के अनुसार मापदंडों के अनुसार नमूनों का परीक्षण किया है।

(iii) दिव्यता इम्पेक्स के आग्रह पर श्री सिंह की प्रतिपरीक्षा इस प्रकार है:

एस. सी. एन. F.No.DRI/AXU/CI/ENQ-13 (आई. एन. टी.-02/2018)/2018 के मामले में श्री गोबिंद सिंह, प्रबंधक (प्रयोगशाला), आई. ओ. सी. एल., केंद्रीय प्रयोगशाला, मुंबई की जिरह कंपनी सचिव और मैसर्स डिविनिटी इम्पेक्स के अधिकृत प्रतिनिधि श्री कुमार पाल मेहता द्वारा मैसर्स डिविनिटी इम्पेक्स और अन्य को दिनांक 24.04.2019 जारी किया गया।

सवाल: आपका नाम क्या है?

जवाब: श्री (डॉ.) गोबिंद सिंह।

सवाल: आपकी योग्यता क्या है?

जवाब: पी. एच. डी. रसायन विज्ञान।

सवाल: आपके पास कितने वर्षों का अनुभव है?

जवाब: 7 वर्षों से।

सवाल: आपने अब तक कितने नमूनों की जांच की है?

जवाब: जो भी नमूने मुझे सौंपे गए हैं, मैंने उनका परीक्षण किया है।

सवाल: आपने कितने नमूनों का परीक्षण किया है?

जवाब: डी. आर. आई. द्वारा मुझे जितने भी नमूने सौंपे जाएं, मैंने उनका परीक्षण किया है।

सवाल: क्या आपने व्यक्तिगत रूप से नमूनों की जांच की है?

जवाब: हाँ।

सवाल: आपको डी. आर. आई. से नमूने कब मिले?

जवाब: 09.08.2018.

सवाल: क्या आपने स्वयं रिपोर्ट तैयार की है?

जवाब: इसके लिए एक प्रक्रिया है। संबंधित प्राधिकारी द्वारा नमूने प्राप्त किए गए, उसके बाद मैंने परीक्षण किया और रिपोर्ट तैयार की और उसके बाद मेरे वरिष्ठ अधिकारी ने रिपोर्ट की समीक्षा की।

सवाल: डी. आर. आई. द्वारा नमूना जब्त किए जाने के कितने दिनों के बाद, आपको नमूना प्राप्त हुआ?

न्यायनिर्णायक प्राधिकरण ने हस्तक्षेप किया और कहा कि यह रिकॉर्ड की बात है और यह न्यायनिर्णायक प्राधिकरण और उस व्यक्ति के समय की बर्बादी है जिसकी प्रतिपरीक्षा की जा रही है।

सवाल: एच. एस. डी. के नमूनों के परीक्षण के लिए मानक विनिर्देश क्या है?

जवाब: IS 1460:2005.

सवाल: नमूनों के लिए कितने मापदंडों का परीक्षण किया गया?

जवाब: प्रयोगशाला की क्षमताओं के अनुसार मानक में निर्धारित कुल 14 मापदंडों का परीक्षण किया गया।

सवाल: क्या प्रयोगशाला में अन्य मानकों की परीक्षण सुविधा उपलब्ध नहीं होने के कारण कुछ मानकों का परीक्षण नहीं किया गया था?

जवाब: हां, क्योंकि प्रयोगशाला एक विपणन प्रयोगशाला है और यह एक शोधन प्रयोगशाला नहीं है।

सवाल: IS 1460:2005, के अनुसार अपने नमूने का परीक्षण कराएँ?

जवाब: इस नमूने का परीक्षण मानक IS 1460:2005 के अनुसार किया गया है, और इस विनिर्देश के तहत कुल 22 परीक्षण किए गए हैं जिनमें से हमने अपनी प्रयोगशाला क्षमता के अनुसार केवल 14 मापदंडों का परीक्षण किया है।"

(जोर दिया गया)

37. चूंकि न्यायनिर्णायक प्राधिकरण और अपीलीय न्यायाधिकरण द्वारा प्राप्त निष्कर्षों और निष्कर्षों का उच्च न्यायालय के निर्णय में विलय हो गया है, इसलिए हम अपना ध्यान उच्च न्यायालय के विश्लेषण और निष्कर्ष पर केंद्रित करेंगे।

38. उच्च न्यायालय का यह निष्कर्ष कि विवादित आयातित वस्तु एच. एस. डी. है, निम्नलिखित आधार पर आधारित था:

(i) हालांकि यह कानून की स्थिर स्थिति है कि सही वर्गीकरण दिखाने का बोझ राजस्व पर है, लेकिन यह पर्याप्त होगा यदि राजस्व अपने मामले को इतनी प्रमुखता के साथ स्थापित करने में समर्थ हो कि किसी तथ्य का अस्तित्व साबित

हो गया हो, और गणितीय सटीकता के साथ तथ्य को साबित करने के लिए राजस्व की ओर से स्थापित करना आवश्यक नहीं है।

- (ii) एक बार जब राजस्व संभावनाओं की प्रधानता के आधार पर वर्गीकरण को साबित करने में समर्थ हो जाता है, तो अपने दावे को साबित करने के लिए भार निर्धारिती पर स्थानांतरित हो जाएगा।
- (iii) वर्तमान मामले में, उच्च न्यायालय इस बात से संतुष्ट था कि नमूने के संबंध में, भारतीय मानक ब्यूरो IS 1460:2005, के भारतीय मानक विनिर्देशन के तहत निर्धारित 21 मापदंडों में से 14 के बाद से तीसरे परीक्षण में एच. एस. डी. से संबंधित संतुष्ट थे कि नमूना उच्च गति वाले डीजल का होगा न कि बेस ऑयल का।
- (iv) हालांकि उच्च न्यायालय इस तथ्य से अवगत था कि IS1460:2005, के तहत निर्धारित 21 मापदंडों के संबंध में सभी परीक्षण उच्च गति वाले डीजल से संबंधित परीक्षण नहीं किए गए थे, बल्कि केवल तीसरे परीक्षण में 14 मापदंडों के संबंध में किए गए थे, और चूंकि आई. ओ. सी. एल. प्रयोगशाला केवल 14 परीक्षण करने के लिए सुसज्जित थी क्योंकि उसके पास शेष सात परीक्षण करने की कोई सुविधा नहीं थी, इसलिए संभावना की प्रधानता पर प्रमाण के सिद्धांत को लागू करते हुए, उच्च न्यायालय ने यह विचार व्यक्त किया कि राजस्व इस तथ्य के अपने बोझ का निर्वहन करने में समर्थ था कि आयातित माल उच्च गति वाला डीजल था न कि आधार तेल।
- (v) ऐसा ठहराते हुए, उच्च न्यायालय आई. ओ. सी. एल. प्रयोगशाला के विशेषज्ञ डॉ. गोबिंद सिंह के साक्ष्य से प्रभावित था, जिन्होंने परीक्षण किया था और उच्च न्यायालय का विचार था कि इस तरह के विशेषज्ञ साक्ष्य की अनदेखी नहीं की जा सकती थी।
- (vi) उच्च न्यायालय ने यह विचार व्यक्त किया कि न्यायाधिकरण ने इस तथ्य को नजरअंदाज कर दिया था कि तीन अलग-अलग प्रयोगशालाओं में किए गए सभी परीक्षणों से केवल एक बात सामने आती है कि नमूने में एच. एस. डी. की विशेषताएँ दिखाई देती हैं।
- (vii) उच्च न्यायालय ने यह भी कहा कि निर्धारिती ऐसा कुछ भी नहीं दिखा पाए हैं जिसके आधार पर यह कहा जा सके कि यदि सभी निर्धारित 21/22 परीक्षण नहीं

समर्थ जाते हैं, तो रिपोर्ट अधूरी रहेगी और साक्ष्य में स्वीकार्य नहीं होगी या नमूने की प्रकृति के बारे में निर्णायक नहीं होगी।

(viii) उच्च न्यायालय ने यह भी विचार व्यक्त किया कि चूंकि 14 परीक्षणों से संकेत मिलता है कि नमूना उच्च गति वाले डीजल का है, केवल इस आधार पर कि इन परीक्षणों को करने के लिए पर्याप्त सुविधा की कमी के कारण प्रयोगशालाओं द्वारा 7 अन्य परीक्षण नहीं किए जा सकते थे, इसलिए इस तरह के साक्ष्य को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता था।

39. कानून के प्रस्ताव पर कोई विवाद नहीं हो सकता है जैसा कि उच्च न्यायालय ने उल्लेख किया है कि आयात के किसी भी सामान के वर्गीकरण के संबंध में सबूत का बोझ राजस्व/सीमा शुल्क प्राधिकरण पर है और टैरिफ अधिनियम के तहत कार्यवाही में सबूत का मानक "उचित संदेह से परे" नहीं है। हालांकि, क्या सीमा शुल्क अधिनियम के तहत वर्गीकरण के लिए "संभावना की प्रधानता" उपयुक्त परीक्षा हो सकती है, इसकी जांच "इस अनुसूची की व्याख्या के लिए सामान्य नियमों" के आलोक में की जानी चाहिए, जैसा कि पहली अनुसूची-शुल्क अधिनियम के भाग 2 में आयात शुल्क (जिसे इसके बाद "नियम" के रूप में संदर्भित किया गया है) में प्रदान किया गया है।

40. उपरोक्त नियम वे सिद्धांत प्रदान करते हैं जिनके आधार पर टैरिफ अधिनियम की पहली अनुसूची में वस्तुओं को वर्गीकृत किया जाना है, जो नीचे दिए गए तीनों मंचों के ध्यान से बच गए थे और प्रत्येक मंच ने उचित वर्गीकरण निर्धारित करने के लिए अपनी कार्यप्रणाली अपनाई थी।

41. उपरोक्त नियमों के नियम 1 में कहा गया है कि वर्गीकरण का निर्धारण शीर्षकों और संबंधित खंड या अध्याय टिप्पणियों की शर्तों के आधार पर किया जाएगा।

नियम 2 को तब लागू किया जाना चाहिए जब यह किसी अधूरे या अधूरी चीज़ या पदार्थों के मिश्रण से संबंधित हो, जिससे हम संबंधित नहीं हैं।

नियम 3 तब लागू होता है जब कुछ कारणों से, सामान पहली नज़र में दो या ज़्यादा हेडिंग के तहत क्लासिफ़ाइड हो सकता है। यह स्थिति वर्तमान मामले में भी उत्पन्न नहीं होती है।

नियम 4 में आगे यह प्रावधान किया गया है कि जिन वस्तुओं को उपरोक्त नियमों के अनुसार वर्गीकृत नहीं किया जा सकता है, उन्हें उन वस्तुओं के लिए उपयुक्त शीर्षक के तहत वर्गीकृत किया जाएगा जिनके वे "सबसे अधिक समान" हैं।

बेहतर मूल्यांकन के लिए, उपरोक्त नियमों के प्रासंगिक भागों को नीचे पुनः प्रस्तुत किया गया है।

इस अनुसूची की व्याख्या के लिए सामान्य नियम

इस अनुसूची में वस्तुओं के वर्गीकरण को निम्नलिखित सिद्धांतों द्वारा नियंत्रित किया जाएगा:

1. खण्डों अध्यायों और उप-अध्यायों के शीर्षक केवल संदर्भ की सुगमता के लिए प्रदान किए गए हैं; कानूनी उद्देश्यों के लिए, वर्गीकरण का निर्धारण शीर्षकों की शर्तों और किसी भी सापेक्ष खंड या अध्याय टिप्पणियों के अनुसार किया जाएगा और बशर्ते कि ऐसे शीर्षकों या टिप्पणियों की निम्नलिखित प्रावधानों के अनुसार अन्यथा आवश्यकता न हो।

2. (क) किसी लेख के शीर्षक में किसी भी संदर्भ को उस लेख के संदर्भ को शामिल करने के लिए लिया जाएगा जो अधूरा या अधूरा है, बशर्ते कि, जैसा प्रस्तुत किया गया है, अधूरे या अधूरे लेखों में पूर्ण या समाप्त लेख का आवश्यक चरित्र है। यह भी माना जाएगा कि उस पूर्ण या समाप्त (या पूर्ण या समाप्त के रूप में वर्गीकृत होने के लिए गिर रहा है) लेख का एक संदर्भ शामिल किया जाए।

(ख). किसी सामग्री या पदार्थ के शीर्षक में किसी भी संदर्भ को अन्य सामग्री या पदार्थों के साथ उस सामग्री या पदार्थ के मिश्रण या संयोजन के संदर्भ को शामिल करने के लिए लिया जाएगा। किसी दी गई सामग्री या पदार्थ के माल के किसी भी संदर्भ में ऐसी सामग्री या पदार्थ का पूरी तरह से या आंशिक रूप से शामिल माल का संदर्भ शामिल किया जाएगा। एक से अधिक सामग्री या पदार्थ वाली वस्तुओं का वर्गीकरण सिद्धांतों के अनुसार होगा।

3. जब नियम 2 (बी) को लागू करके या किसी अन्य कारण से, वस्तुओं को, प्रथमदृष्टया, दो या दो से अधिक शीर्षकों के तहत वर्गीकृत किया जा सकता है, तो वर्गीकरण निम्नानुसार प्रभावी होगा:

(a) जो शीर्षक सबसे विशिष्ट विवरण प्रदान करता है, उसे अधिक सामान्य विवरण प्रदान करने के लिए प्राथमिकता दी जाएगी। हालांकि, जब दो या दो से अधिक शीर्षक मिश्रित या मिश्रित वस्तुओं में निहित सामग्री या पदार्थों के

केवल एक हिस्से को संदर्भित करते हैं या खुदरा बिक्री के लिए रखे गए सेट में वस्तुओं के केवल एक हिस्से को संदर्भित करते हैं, तो उन शीर्षकों को उन वस्तुओं के संबंध में समान रूप से विशिष्ट माना जाना चाहिए, भले ही उनमें से एक माल का अधिक पूर्ण या सटीक विवरण देता हो।

यह मिश्रण, (b) मिश्रित वस्तुएं जो विभिन्न पदार्थों से बनी हों या विभिन्न घटकों से निर्मित हों, और खुदरा बिक्री के लिए सेट में रखी गई वस्तुएं, जिन्हें (क) के संदर्भ में वर्गीकृत नहीं किया जा सकता, उन्हें इस प्रकार वर्गीकृत किया जाएगा जैसे वे उस पदार्थ या घटक से बनी हों जो उनकी मौलिक पहचान प्रदान करता है, जब तक कि यह मानदंड लागू हो सके।

(c) वस्तुओं को (ए) या (बी) के संदर्भ में वर्गीकृत नहीं किया जा सकता है, तो उन्हें उस शीर्षक के तहत वर्गीकृत किया जाएगा जो संख्यात्मक आदेश में उन लोगों के बीच अंतिम होता है जो समान रूप से विचार के योग्य हैं।

4. जिन वस्तुओं को उपरोक्त नियमों के अनुसार वर्गीकृत नहीं किया जा सकता है, उन्हें उन वस्तुओं के लिए उपयुक्त शीर्षक के तहत वर्गीकृत किया जाएगा जिनके वे सबसे अधिक समान हैं।

5. पूर्वगामी प्रावधानों के अलावा, उसमें निर्दिष्ट वस्तुओं के संबंध में निम्नलिखित नियम लागू होंगे:

(a) कैमरा केस, संगीतिक वाद्ययंत्र केस, बंदूक केस, अंकन उपकरण केस, हार केसेस और इसी प्रकार के कंटेनर, जो किसी विशिष्ट वस्तु या वस्तु समूह को समाहित करने के लिए विशेष रूप से आकार दिए गए या फिट किए गए हों, जो दीर्घकालिक उपयोग के लिए उपयुक्त हों और उन वस्तुओं के साथ प्रस्तुत किए जाएं जिनके लिए वे बनाए गए हैं, यदि वे सामान्यतः उन वस्तुओं के साथ बेचे जाते हैं, तो उन्हें उन वस्तुओं के साथ वर्गीकृत किया जाएगा। हालाँकि, यह नियम उन पात्रों पर लागू नहीं होता है जो पूरे पात्र को उसका आवश्यक चरित्र देते हैं।

(b) उपरोक्त (क) के प्रावधानों के अधीन, उसमें माल के साथ प्रस्तुत पैकिंग सामग्री और पैकिंग कंटेनरों को माल के साथ वर्गीकृत किया जाएगा यदि वे सामान्य रूप से ऐसे माल की पैकिंग के लिए उपयोग किए जाने वाले प्रकार के हैं। हालाँकि, यह प्रावधान तब लागू नहीं होता है जब ऐसी पैकिंग सामग्री या पैकिंग कंटेनर स्पष्ट रूप से दोहराए जाने वाले उपयोग के लिए उपयुक्त होते हैं।

6. कानूनी उद्देश्यों के लिए, एक शीर्षक के उप-शीर्षकों में वस्तुओं का वर्गीकरण उपरोक्त नियमों के उन उप-शीर्षकों और किसी भी संबंधित उप-शीर्षक टिप्पणियों और उत्परिवर्तन की शर्तों के अनुसार इस समझ पर निर्धारित किया जाएगा कि केवल एक ही स्तर पर उप-शीर्षकों की तुलना की जा सकती है। इस नियम के प्रयोजनों के लिए सापेक्ष खंड और अध्याय टिप्पणियाँ भी लागू होती हैं, जब तक कि संदर्भ अन्यथा आवश्यक न हो।

XXXXXXXX " "

(जोर दिया गया)

42. उपरोक्त नियम 4 में यह स्पष्ट किया गया है कि जिन वस्तुओं को पूर्ववर्ती नियमों के अनुसार वर्गीकृत नहीं किया जा सकता है, उन्हें उन वस्तुओं के लिए उपयुक्त शीर्षक के तहत वर्गीकृत किया जाएगा जिनके वे सबसे अधिक समान हैं।"

वैज्ञानिक प्रगति, नवाचारों और आविष्कारों के कारण ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न हो सकती हैं जहाँ नए आयातित उत्पाद टैरिफ अधिनियम के अंतर्गत उल्लिखित अध्यायों, शीर्षकों या नोट्स में दी गई विशिष्टताओं से पूरी तरह मेल नहीं खाते। ऐसी स्थिति में, यदि इन पदार्थों के गुणधर्म उन वस्तुओं के समानात्मक (most akin) हों जो टैरिफ अधिनियम की प्रथम अनुसूची में पहले से निर्दिष्ट हैं, तो इन नए उत्पादों को उन वस्तुओं के अनुसार वर्गीकृत किया जाएगा जिनके साथ ये आयातित वस्तुएँ सबसे अधिक समानता या निकटतम अनुरूपता रखती हों।

43. वर्तमान मामले में, जैसा कि ऊपर चर्चा की गई है, तीन प्रयोगशाला परीक्षणों और विशेषज्ञ राय के साक्ष्य के आधार पर, उच्च न्यायालय ने निष्कर्ष निकाला था कि सीमा शुल्क प्राधिकरण संभावना की प्रधानता के परीक्षण को लागू करके यह साबित करने में समर्थ था कि आयातित उत्पाद एचएसडी है। उच्च न्यायालय ने नियम 4 के तहत विचार

किए गए "सबसे समान" परीक्षण को लागू करके अपने निष्कर्ष पर पहुंचने में उपरोक्त नियमों का उल्लेख नहीं किया था।

44. इससे पहले कि हम आगे बढ़ें, उपरोक्त परीक्षण रिपोर्टों और विशेषज्ञ के साक्ष्य की गंभीर जांच करना उचित होगा।

45. वडोदरा में केंद्रीय उत्पाद शुल्क और सीमा शुल्क प्रयोगशाला द्वारा 11.05.2018 पर प्रस्तुत पहली रिपोर्ट के सावधानीपूर्वक अवलोकन से पता चलेगा कि 21 में से केवल 8 मापदंडों के संबंध में नमूनों का परीक्षण किया गया था। यहां तक कि उक्त 8 मापदंडों के संबंध में, फ्लैश बिंदु के संबंध में, जिसके लिए पेंस्की मार्टेस क्लोज्ड कप (पीएमसीसी) परीक्षण के अनुसार विनिर्देश 66 (न्यूनतम) है, परिणाम में इसे 66 डिग्री सेल्सियस से ऊपर होने का उल्लेख किया गया है। इसलिए, फ्लैश बिंदु के संबंध में यह नहीं कहा जा सकता है कि नमूना इस विनिर्देश के अनुरूप है।

परीक्षण रिपोर्ट में उल्लेख किया गया है कि विश्लेषणात्मक पैरामीटर को देखते हुए, "नमूने में उच्च गति वाले डीजल/मोटर वाहन ईंधन तेल की विशेषताएं हैं" जो IS1460:2005 के अनुरूप हैं, और यह कि यह बेस ऑयल नहीं है। हालांकि, उक्त रिपोर्ट विशेष रूप से यह राय नहीं देती है कि नमूना एच. एस. डी. का है या इसे एच. एस. डी. के रूप में माना जा सकता है। रिपोर्ट में केवल इतना कहा गया है कि नमूने में एच. एस. डी. तेल की विशेषताएं हैं। एक अंतर का सागर है जब राय यह कहती है कि एक नमूने में उच्च गति वाले डीजल की विशेषताएं हैं जो अन्य संभावित राय के विपरीत है कि नमूना उच्च गति वाले डीजल तेल है या माना जा सकता है। यदि प्रश्न किए गए लेख में किसी निर्दिष्ट लेख की केवल कुछ विशेषताएं हैं, तो क्या प्रश्न किए गए लेख को निर्दिष्ट लेख के समान माना जा सकता है? हमें डर है कि उत्तर नकारात्मक होना चाहिए, जब तक कि राय स्पष्ट रूप से यह नहीं बताती है कि प्रश्न किए गए लेख (नमूने) में मुख्य विशेषताओं के कारण, प्रश्न किए गए लेख और निर्दिष्ट लेख (वर्तमान मामले में एचएसडी) काफी हद तक समान हैं ताकि प्रश्न किए गए लेख को निर्दिष्ट लेख के साथ पहचाना जा सके।

46. वडोदरा में केंद्रीय उत्पाद शुल्क और सीमा शुल्क प्रयोगशाला की पहली रिपोर्ट में, हालांकि, यह नहीं कहा गया है कि निर्धारित विशेषताओं के कारण, परीक्षण किए गए नमूने को एचएसडी के रूप में माना जा सकता है। दूसरे शब्दों में, विशेषज्ञ द्वारा पहले

परीक्षण परिणाम में कोई स्पष्ट राय नहीं दी गई है कि नमूने वास्तव में एच. एस. डी. के हैं या एच. एस. डी. के माने जा सकते हैं।

47. इसलिए, हमारी राय में, निर्धारित 21/22 के खिलाफ 8 मापदंडों की जांच के आधार पर पहले परीक्षण को यह विचार लेने के लिए एक निश्चित राय नहीं माना जा सकता है कि नमूना वास्तव में एचएसडी का है। उपरोक्त राय के आधार पर यह कहना अटकलबाजी या अनुमानात्मक होगा कि नमूना एच. एस. डी. का है।
48. केंद्रीय राजस्व नियंत्रण प्रयोगशाला, CRCL, नई दिल्ली द्वारा दिनांक 03.07.2018 को प्रस्तुत किए गए दूसरे परीक्षण रिपोर्ट के संदर्भ में, उक्त रिपोर्ट में बताया गया है कि नमूने की 21/22 निर्धारित मापदंडों में से केवल 12 मापदंडों के संबंध में परीक्षण किया गया था और हम पाते हैं कि उपर्युक्त 12 मापदंडों में कम से कम 2 मापदंडों पर नमूना IS 1460:2005 की आवश्यकताओं को पूरा नहीं करता प्रतीत होता है।
49. IS 1460:2005, के अनुसार त्वरित बिंदु 66 डिग्री सेल्सियस (न्यूनतम) है, जबकि उक्त नमूने के संबंध में परीक्षण परिणाम 113 डिग्री सेल्सियस के रूप में दिखाया गया है जो निर्धारित न्यूनतम विनिर्देश से बहुत अधिक है।

इसके अलावा, आसवन सीमा के संबंध में जिसका IS 1460:2005 ने 350 डिग्री सेल्सियस पर 85 (न्यूनतम) और 370 डिग्री सेल्सियस पर 95 (न्यूनतम) के रूप में निर्धारित किया गया है, नमूनों के परीक्षण के परिणाम से पता चलता है कि यह 356 डिग्री सेल्सियस पर 238,358 डिग्री सेल्सियस पर 234,352 डिग्री सेल्सियस पर 234,354 डिग्री सेल्सियस पर 238,356 डिग्री सेल्सियस पर 240,354 डिग्री सेल्सियस पर 240,354 डिग्री सेल्सियस पर 240,350 डिग्री सेल्सियस पर 240,342 डिग्री सेल्सियस और 325 डिग्री सेल्सियस पर 238 निर्धारित आंकड़े 85 (न्यूनतम) और 95 डिग्री सेल्सियस से बहुत अधिक हैं। IS 1460:2005 के अनुसार (न्यूनतम) इन परिस्थितियों में, हालांकि दूसरा परीक्षण IS 1460:2005, के अनुसार 21 मापदंडों में से 12 के संबंध में किया गया था, फ्लैश बिंदु और आसवन सीमा के 2 मापदंडों के संबंध में, नमूने IS 1460:2005 से मेल नहीं खाते थे। इस प्रकार, यह कहा जा सकता है कि नमूने केवल 10 मापदंडों के अनुरूप हैं। विनिर्देश यदि ऐसा है, तो क्या यह कहा जा सकता है कि नमूने उच्च गति वाले डीजल के हैं? हमें इस पर संदेह है।

50. यह देखा गया है कि पहली परीक्षण रिपोर्ट में दी गई राय के मामले में, दूसरी रिपोर्ट में केवल यह उल्लेख किया गया है कि दस नमूनों में से प्रत्येक IS 1460:2005, के अनुसार उच्च गति वाले डीजल/मोटर वाहन डीजल ईंधन के विनिर्देशों के अनुरूप है (हालांकि ऊपर बताए गए दो मापदंडों के संबंध में ऐसा नहीं है), दूसरी जांच रिपोर्ट में स्पष्ट रूप से यह उल्लेख नहीं किया गया है कि निर्धारित विशेषताओं के कारण नमूने को HSD के समान माना जा सकता है। दूसरी रिपोर्ट इस तरह का कोई निर्णायक निष्कर्ष या राय देने से भी बचती है कि ये नमूने HSD के हैं, सिवाय इसके कि इन नमूनों की जांच मानक इस विनिर्देश के 21 मानकों में से केवल 10 मानकों के संदर्भ में की गई है और ये मानकों के अनुसार हैं।

51. इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड द्वारा दिनांक 14.08.2018 पर तैयार की गई तीसरी परीक्षण रिपोर्ट पर आते हुए, जिस पर उच्च न्यायालय द्वारा बहुत अधिक निर्भरता रखी गई है, इसी तरह की अनिर्णायक राय दी गई है।

दिलचस्प बात यह है कि हमने यह भी नोट किया है कि एक पैरामीटर के संबंध में, फ्लैशप्वाइंट, तीसरी रिपोर्ट में उल्लेख किया गया है कि नमूने का फ्लैशप्वाइंट 112 डिग्री सेल्सियस है जो आईएस विनिर्देश के तहत उल्लिखित न्यूनतम फ्लैशप्वाइंट से बहुत अधिक है जो 66 डिग्री सेल्सियस है। यह ध्यान दिया जा सकता है कि पहली रिपोर्ट में, नमूने का फ्लैशप्वाइंट 66 डिग्री सेल्सियस से ऊपर दिखाया गया है, जो स्वयं दूसरी और तीसरी रिपोर्ट के विपरीत काफी अस्पष्ट है, जो बहुत अधिक फ्लैशप्वाइंट का उल्लेख करता है। इसलिए, यह नहीं कहा जा सकता है कि जहां तक फ्लैशप्वाइंट के मापदंड का संबंध है, नमूने वास्तव में भारतीय मानक ब्यूरो ऑफ स्पेसिफिकेशन IS1460:2005, के अनुरूप हैं।

हमें जो चिंतित करती है वह यह है कि क्या तीसरे परीक्षण में 21 मापदंडों में से केवल 14 के संबंध में किए गए परीक्षणों के आधार पर, क्या यह कहा जा सकता है कि नमूने एच. एस. डी. के हैं?

52. यह उल्लेखनीय है कि पहले की दो प्रयोगशाला परीक्षण रिपोर्टों की तरह, इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड की केंद्रीय प्रयोगशाला द्वारा तैयार की गई तीसरी रिपोर्ट भी स्पष्ट और स्पष्ट राय नहीं देती है कि परीक्षण किए गए नमूने वास्तव में एच. एस. डी. के हैं।

तीसरी रिपोर्ट में रीमार्क्स में, पैराग्राफ 4 के तहत यह उल्लेख किया गया है कि,

“यह सैंपल हमारे लैब में IS: 1460:2005, के विनिर्देश के अनुसार टेस्ट किए गए केवल XIV पैरामीटर के विनिर्देश को पूरा करता है।”।

इस प्रभाव पर कोई अन्य टिप्पणी या अवलोकन या राय नहीं दी गई है कि 21 मापदंडों में से 14 के अनुरूपता को देखते हुए, नमूना उच्च गति वाले डीजल के रूप में माने जाने के योग्य है।

53. यह निष्कर्ष निकालने के लिए न्यायनिर्णायक प्राधिकरण/उच्च न्यायालय पर छोड़ दिया गया था कि विशेषज्ञों द्वारा ऐसी राय की अनुपस्थिति में नमूने एच. एस. डी. के हैं।
54. वर्तमान मामले में एक ध्यान देने योग्य पहलू यह है कि इस मुद्दे पर निर्णय लेने के लिए न्यायनिर्णायक प्राधिकरण/न्यायाधिकरण/उच्च न्यायालय को बुलाया गया था, जब यह निर्धारित करने के लिए स्पष्ट रूप से वैज्ञानिक मानदंड निर्धारित किए गए हैं कि क्या जारी किया गया तेल एचएसडी है या नहीं। इसमें साबित किया जाने वाला तथ्य कोई ऐसी घटना, स्थिति, घटना या घटना नहीं है जिसके लिए संभावना की प्रधानता के मानक के आधार पर अपने अस्तित्व को साबित करने के लिए सबूतों के एक समूह की आवश्यकता हो। इसमें शामिल मुद्दा कुछ निर्दिष्ट विनिर्देशों के आधार पर मौजूदा सामग्री/वस्तु के उचित वर्गीकरण के बारे में है। इसके लिए केवल IS:1460:2005, के तहत उल्लिखित विनिर्देशों का उल्लेख करने की आवश्यकता है और एक बार जब नमूना विनिर्देशों के अनुरूप हो जाता है, तो इसे तदनुसार एच. एस. डी. के रूप में पहचाना/वर्गीकृत किया जाएगा, जिसके लिए किसी भी विश्लेषण या साक्ष्य की सराहना की आवश्यकता नहीं होगी। नियमों में यह प्रावधान नहीं है कि कोई भी पदार्थ जो आंशिक रूप से उपरोक्त मापदंडों का अनुपालन करता है, उसे उस निर्दिष्ट पदार्थ के रूप में माना या माना जाएगा। यदि IS:1460:2005, के अनुसार सभी 21 मापदंडों के संबंध में परीक्षण किए गए थे और यदि परिणाम इन सभी मापदंडों के अनुरूप हैं, तो यह निष्कर्ष निकालने में कोई कठिनाई नहीं होगी कि नमूने वास्तव में एच. एस. डी. के हैं। समस्या इसलिए उत्पन्न हुई है क्योंकि परीक्षण केवल कुछ मापदंडों के संबंध में किए गए थे न कि सभी के, यह निर्धारित करने के लिए कि क्या इन परीक्षणों के आधार पर यह साबित किया गया है कि नमूने वास्तव में एच. एस. डी. के हैं, निर्णय करने वाले अधिकारियों/न्यायाधिकरण/उच्च न्यायालय के विवेक पर छोड़ दिया गया है। इस प्रकार, इस अभ्यास ने व्यक्तिपरक मूल्यांकन और साक्ष्य के टुकड़ों के मूल्यांकन का एक तत्व पेश किया है।

55. वर्तमान मामले में, जिन साक्ष्यों/सामग्रियों के आधार पर उच्च न्यायालय ने अपना निष्कर्ष निकाला है, वे परीक्षण रिपोर्ट और विशेषज्ञ डॉ. गोबिंद सिंह के साक्ष्य हैं। चूंकि IS:1460:2005, के तहत सभी 21 निर्धारित मापदंडों के संबंध में परीक्षण रिपोर्ट निर्णायक नहीं हैं और डॉ. गोबिंद सिंह का साक्ष्य भी निश्चित नहीं है, परीक्षण रिपोर्ट और विशेषज्ञ की राय का उचित मूल्यांकन करने की आवश्यकता होगी।

56. 1872 के साक्ष्य अधिनियम की खंड 45 विशेषज्ञ राय से संबंधित है, जो इस प्रकार है:

“धारा 45।

विशेषज्ञों की राय।

जब न्यायालय को विदेशी कानून, या विज्ञान या कला के किसी बिंदु पर, या हस्तलेखन या उंगली के छापों की पहचान के बारे में कोई राय बनानी होती है, तो उस बिंदु पर ऐसे विदेशी कानून, विज्ञान या कला में विशेष रूप से कुशल व्यक्तियों की राय, या हस्तलेखन या उंगली के छापों की पहचान के बारे में प्रश्न प्रासंगिक तथ्य हैं।

ऐसे व्यक्तियों को विशेषज्ञ कहा जाता है।”

57. विशेषज्ञों की राय, चाहे वे कितनी भी भारी क्यों न हों, अदालत के लिए बाध्यकारी नहीं है और केवल अदालत के लिए प्रासंगिक है कि वह इस मुद्दे पर किसी भी तथ्य पर अंतिम निर्णय पर आए। हालाँकि, चूंकि अदालतें विज्ञान के विषय में विशेषज्ञ नहीं हैं, इसलिए वे आम तौर पर वैज्ञानिक रिपोर्ट को प्रतिग्रहण करना करते हैं और उस पर कार्रवाई करते हैं। लेकिन जहां विशेषज्ञ की राय कुछ कमियों या अस्पष्टताओं, स्पष्टता की कमी या अपर्याप्तता से ग्रस्त है, तो यह न्यायिक जांच के अधीन होगी और ऐसी परिस्थितियों में पूरी तरह से उस पर भरोसा करना सुरक्षित नहीं होगा।

58. हम विशेषज्ञ गवाहों के संबंध में इस न्यायालय के विचारों को संक्षेप में दोहरा सकते हैं।

59. हि. प्र. राज्य बनाम जय लाल, (1999) 7 एस. सी. सी. 280 के मामले में इस न्यायालय ने कहा कि विशेषज्ञ गवाह की विश्वसनीयता उसके निष्कर्षों के समर्थन में बताए गए कारणों और प्रस्तुत किए गए आंकड़ों और सामग्री पर निर्भर करती है जो उसके निष्कर्षों का आधार हैं। इसे इस प्रकार देखा गया:

“18. एक विशेषज्ञ तथ्य का गवाह नहीं होता है। उनका साक्ष्य वास्तव में एक सलाहकार चरित्र का है। एक विशेषज्ञ गवाह का कर्तव्य न्यायाधीश को निष्कर्षों

की सटीकता का परीक्षण करने के लिए आवश्यक वैज्ञानिक मानदंड प्रस्तुत करना है ताकि न्यायाधीश मामले के साक्ष्य द्वारा साबित तथ्यों पर इन मानदंडों को लागू करके अपना स्वतंत्र निर्णय तैयार कर सके। वैज्ञानिक राय साक्ष्य, यदि बोधगम्य, विश्वसनीय और परखा जा सकता है, तो एक कारक बन जाता है और अक्सर मामले के अन्य साक्ष्यों के साथ विचार के लिए एक महत्वपूर्ण कारक बन जाता है। ऐसे गवाह की विश्वसनीयता उसके निष्कर्षों के समर्थन में बताए गए कारणों और प्रस्तुत किए गए आंकड़ों और सामग्री पर निर्भर करती है जो उसके निष्कर्षों का आधार बनते हैं।

(जोर दिया गया)

60. इस न्यायालय ने **दयाल सिंह बनाम उत्तरांचल राज्य (2012) 8 एस. सी. सी. 263**

मामले में उपरोक्त दृष्टिकोण को दोहराया।

यह भी देखा गया कि विशेषज्ञ साक्ष्य को नियंत्रित करने वाला आवश्यक सिद्धांत यह है कि विशेषज्ञ को न केवल अपनी राय का समर्थन करने के लिए कारण प्रदान करना है, बल्कि परिणाम सीधे प्रदर्शन योग्य होना चाहिए। इस प्रकार, यदि किसी विशेषज्ञ की रिपोर्ट गलत, अपर्याप्त या गुप्त है और उसकी रिपोर्ट और मामले में उसके साक्ष्य में समानताओं या विषमताओं की जानकारी उपलब्ध नहीं है, तो उसकी राय का कोई फायदा नहीं है।

यह दोहराया गया कि एक विशेषज्ञ राय का उद्देश्य मुख्य रूप से अंतिम निष्कर्ष पर पहुंचने में अदालत की सहायता करना है। ऐसी रिपोर्ट अदालत के लिए बाध्यकारी नहीं है। अदालत से उम्मीद की जाती है कि वह रिपोर्ट का विश्लेषण करेगी, इसे रिकॉर्ड पर मौजूद अन्य साक्ष्यों के साथ पढ़ेगी और फिर अपनी अंतिम राय बनाएगी कि क्या ऐसी रिपोर्ट निर्भरता के योग्य है या नहीं।

इसे इस प्रकार देखा गया:

“35. यह हमें एक सहायक मुद्दे पर लाता है कि न्यायालय ऐसे मामलों में साक्ष्य की सराहना कैसे करेगा। अदालतें, आम तौर पर, विशेषज्ञ साक्ष्य को अधिक स्वीकार्यता की भावना के साथ देखती हैं, लेकिन यह भी उतना ही सच है कि अदालतें विशेषज्ञों की रिपोर्ट से पूरी आत्यन्तिक रूप निर्देशित नहीं होती हैं, विशेष रूप से यदि ऐसी रिपोर्टें निष्पक्ष,

अस्थिर हैं और अभियोजन पक्ष को गलत तरीके से निर्देशित करने के जानबूझकर किए गए प्रयास का परिणाम हैं।

XX

39. विशेषज्ञ साक्ष्य पर भारतीय कानून किसी भी महत्वपूर्ण रूप से अलग आधार पर आगे नहीं बढ़ता है। एक विशेषज्ञ का कौशल और अनुभव उसकी राय का लोकाचार है, जिसे स्वयं तर्कपूर्ण और आश्वस्त किया जाना चाहिए। यह कहने का मतलब यह नहीं है कि कोई अन्य दृष्टिकोण संभव नहीं होगा, लेकिन यदि विशेषज्ञ के दृष्टिकोण को अदालत के दिमाग में उचित महत्व देना है, तो इसे अच्छी तरह से लिखा और आश्वस्त करना होगा।.....

40. हमें वास्तव में विभिन्न निर्णयों को दोहराने की आवश्यकता नहीं है जिन्होंने यह विचार रखा है कि एक विशेषज्ञ राय का उद्देश्य मुख्य रूप से अंतिम निष्कर्ष पर पहुंचने में अदालत की सहायता करना है। ऐसी रिपोर्ट अदालत के लिए बाध्यकारी नहीं है। अदालत से अपेक्षा की जाती है कि वह रिपोर्ट का विश्लेषण करे, इसे रिकॉर्ड पर मौजूद अन्य साक्ष्यों के साथ पढ़े और फिर अपनी अंतिम राय बनाए कि क्या ऐसी रिपोर्ट निर्भरता के योग्य है या नहीं....."

61. हालाँकि ये टिप्पणियाँ आपराधिक मुकदमों के संदर्भ में की गई थीं, लेकिन हमारे विचार में विशेषज्ञ राय की प्रासंगिकता और मूल्यांकन में अंतर्निहित बुनियादी सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए, वर्तमान मामले में भी फायदेमंद होगा।
62. उपरोक्त के आलोक में, हम परीक्षण के परिणामों और विशेषज्ञ गवाह, डॉ. गोबिंद सिंह, आईओसीएल, मुंबई के प्रबंधक (प्रयोगशाला) के साक्ष्य की जांच करेंगे, जिस पर उच्च न्यायालय ने इस निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए बहुत अधिक भरोसा किया कि राजस्व/विभाग अपने मामले को स्थापित करने में समर्थ था कि आयातित माल एचएसडी थे।

विशेषज्ञ गवाह की प्रतिपरीक्षा के दौरान, 8 मापदंडों के बारे में निम्नलिखित प्रश्न पूछे गए थे जिन पर नमूनों का परीक्षण नहीं किया गया था:

“सवाल: क्या इसका मतलब यह है कि अन्य 8 मापदंड यह पता लगाने या यह तय करने के लिए महत्वपूर्ण नहीं हैं कि नमूना एच. एस. डी. के मानदंडों को पूरा करता है या नहीं?

जवाब: पहले से ही रिपोर्ट में प्रदान किया गया है कि प्रयोगशाला में नमूनों का परीक्षण IS:1406:2005, के अनुसार किया गया था और केवल 14 मापदंडों के परीक्षण के लिए एक सुविधा उपलब्ध है और शेष 8 मापदंडों के लिए, सुविधा उपलब्ध नहीं है जिसके लिए मैं टिप्पणी नहीं कर सकता।

सवाल: क्या आप IS:1460:2005,के तहत प्रदान किए गए 8 मापदंडों के कार्य/विशेषताओं को जानते हैं, जिनका परीक्षण नहीं किया गया है?

जवाब: चूंकि 8 मापदंडों का परीक्षण नहीं किया गया है, इसलिए मैं इन मापदंडों के संबंध में टिप्पणी नहीं कर सकता।

63. उपरोक्त से, यह स्पष्ट रूप से ध्यान देने योग्य है कि परीक्षण करने वाला विशेषज्ञ यह तय करने के लिए कि नमूना एच. एस. डी. का है या नहीं, 8 मापदंडों के महत्व के रूप में महत्वपूर्ण प्रश्न का उत्तर देने से बच गया। यह याद रखा जाना चाहिए कि भारतीय मानक ब्यूरो IS:1460:2005,के भारतीय विनिर्देशों में विशेष रूप से 21 मानदंड प्रदान किए गए हैं, जो उच्च गति वाले तेल की विशेषताएँ हैं और नियमों के तहत कुछ भी उल्लेख नहीं किया गया है कि क्या केवल कुछ विनिर्देशों का अनुपालन वस्तु को एच. एस. डी. के रूप में मानने को उचित ठहराएगा।

64. जहाँ तक तीसरे परीक्षण का संबंध है, केवल 13 विनिर्देश विनिर्देशों के अनुरूप थे (और 14 नहीं जैसा कि रिपोर्ट में उल्लेख किया गया है क्योंकि फ्लैश पॉइंट के संबंध में, नमूना विनिर्देश को पूरा नहीं करता था)। शेष विनिर्देशों की पूर्ति की अनुपस्थिति में मैं, क्या यह आधिकारिक रूप से कहा जा सकता है कि नमूने अभी भी एच. एस. डी. के रूप में योग्य होंगे?

दिलचस्प बात यह है कि जैसा कि ऊपर चर्चा की गई है, न तो विशेषज्ञ और न ही परीक्षण के परिणामों ने स्पष्ट रूप से कहा कि ये नमूने वास्तव में कुछ मापदंडों की पूर्ति पर एच. एस. डी. के हैं।

विशेषज्ञ से विशेष रूप से पूछा गया था कि क्या नमूना मोटर वाहन डीजल था, जिसे विशेषज्ञ ने टाल दिया और यह कहने के अलावा स्पष्ट उत्तर नहीं दिया कि यह पहले से ही रिपोर्ट में लिखा गया है और नमूने का परीक्षण IS:1460:2005, के अनुसार किया गया है, जैसा कि निम्नलिखित प्रश्न और उत्तर से स्पष्ट है।

“सवाल: क्या आप कह सकते हैं कि यह एक मोटर वाहन डीजल है?

जवाब: प्रयोगशाला रिपोर्ट में पहले से ही लिखा गया है और हमने IS:1460:2005, के अनुसार मापदंडों के अनुसार नमूनों का परीक्षण किया है।”

65. यह ध्यान दिया जा सकता है कि लिखित रिपोर्ट में, यह उल्लेख नहीं किया गया था कि नमूना एचएसडी का है, हालांकि इसमें उल्लेख किया गया है कि इसका परीक्षण IS:1460:2005, के मापदंडों के अनुसार किया गया था और इसमें कुछ मापदंडों की विशेषताएँ हैं।

न्यायनिर्णायक प्राधिकरण के साथ-साथ उच्च न्यायालय ने, रिपोर्ट में या विशेषज्ञ द्वारा ऐसी कोई स्पष्ट राय दिए बिना, फिर भी, यह निष्कर्ष निकाला कि संभाव्यता की प्रधानता के परीक्षण को लागू करके नमूने वास्तव में एच. एस. डी. के थे, जो हमें लगता है कि समस्याग्रस्त है।

66. विशेषज्ञ द्वारा राय की स्पष्टता की कमी के अलावा और परीक्षण रिपोर्ट में इस प्रभाव के लिए कि नमूने एच. एस. डी. के हैं, एक पहलू है जिसे हम महत्वपूर्ण मानते हैं।

67. जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, तीनों परीक्षण परिणाम बताते हैं कि नमूने फ्लैश पॉइंट से संबंधित विनिर्देश को पूरा नहीं करते हैं। दुर्भाग्य से, विशेषज्ञ ने प्रतिपरीक्षा के दौरान फ्लैश पॉइंट से संबंधित उनसे पूछे गए खोज प्रश्नों के संतोषजनक उत्तर देने से परहेज किया है, हालांकि क्षेत्र में एक विशेषज्ञ के रूप में, उनसे ईंधन की प्रकृति का निर्धारण करने में फ्लैश पॉइंट के महत्व के बारे में वैध संदेहों को जानने और स्पष्ट करने की उम्मीद की गई थी, जैसा कि निम्नलिखित प्रश्नों और उत्तरों से स्पष्ट होता है।

“सवाल: क्या आपको लगता है कि एच. एस. डी. पर विचार करने के लिए एक तत्व फ्लैशप्वॉइंट है?

जवाब: सामग्री पर टिप्पणी नहीं कर सकते। मानक में निर्धारित फ्लैश प्वॉइंट 35 डिग्री सेल्सियस के लिए न्यूनतम तापमान। हमने रिपोर्ट जमा कर दी है।

सवाल: एच. एस. डी. के रूप में नमूने पर विचार करने के लिए अधिकतम और न्यूनतम फ्लैशप्वाइंट क्या है?

जवाब: केवल न्यूनतम सीमा के बारे में बात की जाती है जो 35 डिग्री सेल्सियस है और मानक में कोई अधिकतम सीमा निर्धारित नहीं है।

सवाल: यदि मामला, फ्लैश प्वाइंट 100 डिग्री सेल्सियस, 150 डिग्री सेल्सियस, 200 डिग्री सेल्सियस आदि से अधिक है, तो क्या यह अभी भी एचएसडी मानक से संबंधित है?

जवाब: फ्लैश प्वाइंट जो भी हो, 35 डिग्री सेल्सियस से ऊपर टिप्पणी नहीं कर सकते, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।

सवाल: प्वाइंट नं.। सीमा शुल्क अधिनियम के अध्याय 27 के पूरक ध्यान दें । में कहा गया है कि "जूट बैचिंग ऑयल", "टेक्सटाइल ऑयल" हाइड्रोकार्बन तेल हैं, जिनके फ्लैश पॉइंट 93 डिग्री सेल्सियस पर और उससे ऊपर होते हैं।

जवाब: टिप्पणी नहीं कर सकते। फ्लैशप्वाइंट एकमात्र पैरामीटर नहीं है। हमने IS:1460:2005, के अनुसार हमें प्रस्तुत किए गए नमूनों का परीक्षण किया है।

सवाल: आई. ओ. सी. एल. विभिन्न पक्षों को एच. एस. डी. की आपूर्ति करता है। क्या आपने कभी ऐसी स्थिति का सामना किया है जिसमें आपको 93 डिग्री सेल्सियस से ऊपर की इन सभी परीक्षण रिपोर्टों का फ्लैश प्वाइंट मिला हो और इसे एच. एस. डी. माना गया हो?

जवाब: फ्लैश प्वाइंट एकमात्र पैरामीटर नहीं है जिसका उपयोग IS:1460:2005, के अनुसार नमूने को मापने के लिए किया जाता है

सवाल: क्या आप कह सकते हैं कि यह एक मोटर वाहन डीजल है?

जवाब: प्रयोगशाला रिपोर्ट में पहले से ही लिखा गया है और हमने IS:1460:2005, के अनुसार मापदंडों के अनुसार नमूनों का परीक्षण किया है।

68. हम फ्लैश प्वाइंट के बारे में विशेषज्ञ द्वारा दिए गए उत्तरों से काफी भ्रमित हैं, जैसे कि वह पेट्रोलियम उत्पादों में फ्लैश प्वाइंट के महत्व से अवगत नहीं थे। वे यह निर्धारित

करने में इस मापदंड पर गैर-अनुरूपता के संबंध में टालमटोल कर रहे थे कि क्या नमूने एच. एस. डी. के हैं।

सीमा शुल्क शुल्क अधिनियम के परिशिष्ट-2 में अध्याय 27 के पूरक ध्यान में फ्लैश प्वाइंट का उल्लेख किया गया है जिसमें कहा गया है कि इसका निर्धारण पेट्रोलियम अधिनियम, 1934 के तहत बनाए गए नियमों में इस संबंध में निर्धारित परीक्षण के बाद किया जाएगा।

पेट्रोलियम अधिनियम, 1934 की खंड 2 (सी) के तहत किसी भी पेट्रोलियम के फ्लैश-पॉइंट को सबसे कम तापमान के रूप में परिभाषित किया गया है जिस पर यह एक वाष्प पैदा करता है जो प्रज्वलित होने पर एक क्षणिक फ्लैश देगा, जो अध्याय II के प्रावधानों और उसके तहत बनाए गए नियमों के अनुसार निर्धारित किया जाता है।

69. पेट्रोलियम अधिनियम त्वरित बिंदु की मात्रा के आधार पर पेट्रोलियम उत्पादों को तीन श्रेणियों में वर्गीकृत करता है, अर्थात्:

- (i) "पेट्रोलियम वर्ग ए" जिसका अर्थ है तेइस डिग्री सेंटीग्रेड से कम फ्लैश-पॉइंट वाला पेट्रोलियम;
- (ii) "पेट्रोलियम वर्ग बी" जिसका अर्थ है पेट्रोलियम जिसका त्वरित बिंदु तेइस डिग्री सेंटीग्रेड और उससे अधिक लेकिन पैंसठ डिग्री सेंटीग्रेड से कम है;
- (iii) "पेट्रोलियम वर्ग सी" जिसका अर्थ है पैंतालीस डिग्री सेंटीग्रेड और उससे ऊपर लेकिन नब्बे डिग्री सेंटीग्रेड से नीचे का एक फ्लैश-पॉइंट वाला पेट्रोलियम।

70. फ्लैश प्वाइंट के संबंध में विनिर्देशन तदनुसार कुछ महत्व का है, भले ही यह यह निर्धारित करने में सबसे महत्वपूर्ण पैरामीटर न हो कि कोई पेट्रोलियम उत्पाद एचएसडी है या नहीं। IS:1460:2005, के तहत दिए गए विनिर्देशन से एच. एस. डी. में न्यूनतम 66 डिग्री सेल्सियस का फ्लैश प्वाइंट होगा। इस प्रकार, इसे पेट्रोलियम अधिनियम के संदर्भ में पेट्रोलियम श्रेणी सी के रूप में माना जाएगा। यह किसी का मामला नहीं है कि एच. एस. डी. हाइड्रोकार्बन नहीं है और न ही मोटर वाहन ईंधन है। यदि ऐसा है, तो इसे पेट्रोलियम अधिनियम के तहत श्रेणी सी पेट्रोलियम उत्पाद के रूप में वर्गीकृत किया जाएगा, यदि श्रेणी बी या श्रेणी ए उत्पाद नहीं है। जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, पेट्रोलियम वर्ग सी के फ्लैश बिंदु की सीमा 65 डिग्री सेल्सियस और 93 डिग्री सेल्सियस के बीच है जबकि परीक्षण के परिणाम एक उच्च फ्लैश बिंदु दिखाते हैं।

दुर्गा ऑयल कंपनी बनाम उत्तर प्रदेश राज्य (1998) 6 एस. सी. सी. 299 में इस न्यायालय के निर्णय पर भरोसा करते हुए अपीलकर्ताओं की ओर से यह प्रस्तुत किया गया है कि एच. एस. डी. पेट्रोलियम श्रेणी बी उत्पाद है। इस प्रकार, निहितार्थ से, यदि नमूने का फ्लैश बिंदु 93 डिग्री सेल्सियस से ऊपर जाता है, तो यह संदिग्ध है कि क्या आयातित तेल को एचएसडी माना जा सकता है, भले ही एचएसडी के लिए अधिकतम फ्लैश बिंदु का IS:1460:2005, में विशेष रूप से उल्लेख नहीं किया गया है लेकिन केवल न्यूनतम।

71. विशेषज्ञ डॉ. गोबिंद सिंह द्वारा दिए गए टालमटोल और गैर-प्रतिबद्ध उत्तरों के कारण, जो वैध निष्कर्ष निकाला जा सकता है, वह यह है कि उनकी राय और परीक्षण के परिणाम भी अनिर्णायक, अस्पष्ट हैं और तेल को एचएसडी के रूप में निर्धारित करने के लिए पूरी तरह से विश्वसनीय नहीं कहा जा सकता है।
72. हालाँकि, हम यह स्पष्ट करना चाहेंगे कि हम तेल की प्रकृति के निर्धारण से संबंधित वैज्ञानिक विशेषज्ञ के जूते में कदम नहीं रख रहे हैं, कि क्या यह एचएसडी या बेस ऑयल है। फिर भी, हम संतुष्ट हैं कि एक बहुत ही स्पष्ट और प्रासंगिक कारक है जिस पर विशेषज्ञ स्पष्ट करने में विफल रहे हैं, और जिसके संबंध में परीक्षण रिपोर्ट भी मौन रही है, जो कि फ्लैश पॉइंट से संबंधित है, जिससे सीमा शुल्क प्राधिकरण द्वारा आयातित तेल का एचएसडी के रूप में वर्गीकरण अत्यधिक संदिग्ध हो गया है। यदि विशेषज्ञ या परीक्षण रिपोर्ट में स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया था कि नमूनों द्वारा दिखाए गए उच्च स्तर के फ्लैश पॉइंट और सभी मापदंडों के संबंध में गैर-परीक्षा के बावजूद, इन नमूनों को अभी भी एच. एस. डी. माना जा सकता है, तो हम इस तरह की राय को उचित सम्मान देते।

लेकिन जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, न तो विशेषज्ञ और न ही परीक्षण के परिणाम स्पष्ट रूप से और स्पष्ट रूप से उल्लेख करते हैं कि ये नमूने एच. एस. डी. के हैं, सिवाय एक अस्पष्ट टिप्पणी करने के कि ये नमूने IS:1460:2005, के अनुसार एच. एस. डी. के कुछ मापदंडों के अनुरूप हैं, जैसा कि ऊपर चर्चा की गई है, केवल एच. एस. डी. के कुछ मापदंडों के अनुरूप होने से, नमूनों को एच. एस. डी. के बराबर नहीं माना जा सकता है। विशेषज्ञ की राय और परीक्षण के परिणाम उतने ही अस्पष्ट हैं जितना कि ये एच. एस. डी. के रूप में तेल का वर्गीकरण हो सकता है।

73. हालाँकि, जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, उच्च न्यायालय ने संभावना की प्रधानता के परीक्षण को लागू करके निष्कर्ष निकाला कि विचाराधीन पदार्थ एच. एस. डी. है।
74. इस मोड़ पर "उचित संदेह से परे प्रमाण" के विरोधाभास में "संभावना की प्रधानता" अभिव्यक्ति के अर्थ पर संक्षेप में ध्यान देना उचित हो सकता है।
75. साक्ष्य अधिनियम, 1872 की खंड 3 के तहत, एक तथ्य को तब साबित कहा जाता है जब उसके समक्ष मामलों पर विचार करने के बाद, अदालत या तो इसे मौजूद मानती है, या इसके अस्तित्व को इतना संभावित मानती है कि एक विवेकआत्यन्तिक व्यक्ति को, विशेष मामले की परिस्थितियों में, इस धारणा पर कार्य करना चाहिए कि यह मौजूद है, जो स्पष्ट रूप से इंगित करता है कि साक्ष्य अधिनियम सबूत के आत्यन्तिक मानक पर जोर नहीं देता है। साक्ष्य अधिनियम भी कहीं भी "संभावना की प्रधानता" और "उचित संदेह से परे" के आधार पर प्रमाण के अर्थ के रूप में परिभाषित नहीं करता है जो प्रमाण के अलग-अलग मानक हैं।
76. इन कार्यवाहियों में शामिल अंतर हितधारकों को ध्यान में रखते हुए समय के साथ आपराधिक और नागरिक क्षेत्राधिकारों में सबूत के विभिन्न मानक विकसित हुए हैं। आपराधिक कार्यवाही में, एक प्रतिवादी के लिए दांव अधिक होते हैं क्योंकि इसमें उस व्यक्ति के बहुमूल्य अधिकार और स्वतंत्रता शामिल होती है जो आरोपित अपराध के लिए दोषी ठहराए जाने पर उसे खोने की क्षमता रखता है। दूसरी ओर, नागरिक दायित्व कम निंदनीय है, और जुर्माना, यदि कोई हो, तो कम गंभीर है।
77. एम. सिद्दीक (राम जन्मभूमि मंदिर-5 जे) बनाम सुरेश दास, (2020) 1 एस. सी. सी. 1 में इस न्यायालय द्वारा "संभावना की प्रधानता" अभिव्यक्ति की व्याख्या की गई है। उपरोक्त मामले में, इस न्यायालय ने एक विवेकपूर्ण व्यक्ति के परीक्षण को लागू किया, जिसने विभिन्न संभावनाओं को तौलने पर पाया कि प्रमुखता विशेष तथ्य के अस्तित्व के पक्ष में है। यह देखा गया कि संभाव्यता की प्रधानता द्वारा प्रमाण के मामले में भी, उस मानक के भीतर संभाव्यता की डिग्री हो सकती है और डिग्री विषय-वस्तु पर निर्भर करती है।"

यह माना गया था कि,

"720. दीवानी मुकदमे में अदालत संभावनाओं की प्रधानता द्वारा नियंत्रित सबूत के एक मानक को लागू करती है। इस मानक को कभी-कभी संभावना के

संतुलन या साक्ष्य की प्रधानता के रूप में भी वर्णित किया जाता है। साक्ष्य पर फिफसन मानक को संक्षेप में तैयार करता है: यदि इसलिए, साक्ष्य ऐसा है कि अदालत कह सकती है कि "हमें लगता है कि यह अधिक संभावित है", तो बोझ हटा दिया जाता है, लेकिन यदि संभावनाएं समान हैं, तो ऐसा नहीं है। [मिलर बनाम पेंशन मंत्री में [मिलर बनाम पेंशन मंत्री, (1947) 2 सभी ई. आर. 372],

लॉर्ड डेनिंग, न्यायाधीश. (उस समय मास्टर ऑफ रोल्स के रूप में) ने संभावनाओं के संतुलन या प्रधानता के सिद्धांत को निम्नलिखित शब्दों में परिभाषित किया: (सभी ई. आर. पी. 373 एच)

"(1) ... इसे निश्चितता तक पहुंचने की आवश्यकता नहीं है, लेकिन इसमें उच्च स्तर की संभावना होनी चाहिए। उचित संदेह से परे सबूत का मतलब संदेह की छाया से परे सबूत नहीं है। कानून समुदाय की रक्षा करने में विफल रहेगा यदि यह न्यायाधीश के मार्ग को भटकाने की काल्पनिक संभावनाओं को स्वीकार करता है। यदि साक्ष्य किसी व्यक्ति के खिलाफ इतना मजबूत है कि उसके पक्ष में केवल एक दूरस्थ संभावना छोड़ देता है जिसे सजा के साथ खारिज किया जा सकता है, तो "निश्चित रूप से यह संभव है, लेकिन कम से कम संभावित में नहीं" मामला उचित संदेह से परे साबित होता है, लेकिन उससे कम कुछ भी पर्याप्त नहीं होगा।

(जोर दिया गया)

721. कानून मानता है कि संभावनाओं की प्रधानता के मानक के भीतर, संभावना की अलग-अलग डिग्री हो सकती है। इसे संक्षेप में डेनिंग, एलजे द्वारा बेटर बनाम बेटर [बेटर बनाम बेटर, [1951] पी. 35 (सीए) में संक्षेपित किया गया था।], जहाँ उन्होंने इस सिद्धांत को इस प्रकार तैयार किया: (पृ. 37)

"... इसी तरह, दीवानी मामलों में भी, मामले को संभावना की प्रधानता से साबित किया जाना चाहिए, लेकिन उस मानक के भीतर संभावना की डिग्री हो सकती है। डिग्री विषय-वस्तु पर निर्भर करती है।"

722. साक्ष्य अधिनियम की खंड 3 में "सिद्ध" अभिव्यक्ति की परिभाषा निम्नलिखित शब्दों में है:

"3. ... "सिद्ध हुआ"— एक तथ्य को तब साबित कहा जाता है जब उसके समक्ष मामलों पर विचार करने के बाद, अदालत या तो इसे अस्तित्व में मानती है, या इसके अस्तित्व को इतना संभावित मानती है कि एक बुद्धिमान व्यक्ति को, विशेष मामले की परिस्थितियों में, इस धारणा पर कार्य करना चाहिए कि यह मौजूद है।"

723. किसी तथ्य का प्रमाण उसके अस्तित्व की संभावना पर निर्भर करता है। न्यायालय का निष्कर्ष निम्नलिखित पर आधारित होना चाहिए ।

723.1 एक विवेकपूर्ण व्यक्ति की परीक्षा, जो इस धारणा के तहत कार्य करता है कि एक तथ्य मौजूद है।

723.2 किसी विशेष मामले के संदर्भ और परिस्थितियों में।

724. इसका विश्लेषण करते हुए, वाई. वी. चंद्रचूड़, जे. (तत्कालीन विद्वान मुख्य न्यायाधीश के रूप में) एन. जी. दास्ताने बनाम एस. दास्ताने [एन. जी. दास्ताने बनाम एस. दास्ताने, (1975) 2 एस. सी. सी. 326] में।
आयोजित:(एस. सी. सी. पीपी. 335-36, पैरा 24)

"इस प्रकार, किसी तथ्य के अस्तित्व के बारे में विश्वास संभावनाओं के संतुलन पर आधारित हो सकता है। तथ्य स्थिति के संबंध में परस्पर विरोधी संभावनाओं का सामना करने वाला एक बुद्धिमान व्यक्ति इस धारणा पर कार्य करेगा कि तथ्य मौजूद है, यदि विभिन्न संभावनाओं को तौलने पर वह पाता है कि प्रधानता विशेष तथ्य के अस्तित्व के पक्ष में है। एक बुद्धिमान व्यक्ति के रूप में, इसलिए अदालत इस परीक्षण को यह पता लगाने के लिए लागू करती है कि क्या मुद्दे में एक तथ्य को साबित किया जा सकता है। इस प्रक्रिया में पहला कदम संभावनाओं को ठीक करना है, दूसरा उन्हें मापना है, हालांकि दोनों अक्सर आपस में मिल सकते हैं। असंभव को पहले चरण में और असंभव को दूसरे चरण में समाप्त कर दिया जाता है।

संभावनाओं की विस्तृत श्रृंखला के भीतर अदालत को अक्सर एक कठिन विकल्प चुनना पड़ता है, लेकिन यह वह विकल्प है जो *अंततः निर्धारित करता है कि संभावनाओं की प्रधानता कहाँ है। महत्वपूर्ण मुद्दे जैसे कि जो पक्षों की स्थिति को प्रभावित करते हैं, वे वचन पत्र पर ऋण की तुलना में अधिक गहन जांच की मांग करते हैं: "किसी मुद्दे की प्रकृति और गंभीरता अनिवार्य रूप से मुद्दे की सच्चाई की उचित संतुष्टि प्राप्त करने के तरीके को निर्धारित करती है [राइट बनाम राइट, (1948) 77 सी. एल. आर. 191 (ऑस्ट) में जे. डिक्सन के अनुसार]], सी. एल. आर. पी.210"; या जैसा कि लॉर्ड डेनिंग ने कहा है, "संभावना की मात्रा विषय-वस्तु पर निर्भर करती है। "जिस अनुपात में अपराध गंभीर है, उसी अनुपात में सबूत स्पष्ट होना चाहिए [ब्लिथ बनाम ब्लिथ, [1966] ए. सी. 643:[1966] 2 डब्ल्यूएलआर 634:(1966) 1 सभी ईआर 524 (एचएल)]], पी पर सभी ईआर 536'। लेकिन क्या मुद्दा क्रूरता का है या एक प्रोनोट पर ऋण का, आवेदन करने के लिए परीक्षण यह है कि क्या दीवानी मामलों में यह, आम तौर पर, यह पता लगाने के लिए आवेदन करने के लिए सबूत का मानक है कि क्या सबूत का बोझ हटा दिया गया है।"*

(जोर दिया गया)

725. अदालत ने माना कि संभावनाओं की प्रधानता के मानक के भीतर, संभावना की डिग्री शामिल विषय-वस्तु पर आधारित है।

726. यू. पी. राज्य बनाम कृष्ण गोपाल [उत्तर प्रदेश राज्य बनाम. कृष्ण गोपाल, (1988) 4 एस. सी. सी. 303:1988 एससीसी (सी. आर. एल.)]], इस अदालत ने टिप्पणी की:(एस. सी. पी. 314, पैरा 26)

"26. संभाव्यता की अवधारणाओं और इसकी डिग्री को स्पष्ट रूप से गणितीय रूप से गणना की जाने वाली इकाइयों के संदर्भ में व्यक्त नहीं किया जा सकता है कि ऐसी कितनी इकाइयाँ उचित संदेह से परे प्रमाण का गठन करती हैं। संभाव्यता की डिग्री और प्रमाण की मात्रा के मूल्यांकन में एक अचूक व्यक्तिपरक तत्व है। फॉरेंसिक संभाव्यता, अंतिम

विश्लेषण में, एक मजबूत सामान्य ज्ञान और अंततः, न्यायाधीश के प्रशिक्षित अंतर्ज्ञान पर निर्भर होनी चाहिए।"

78. उपरोक्त निर्णय जो मानते हैं वह यह है कि संभावनाओं की डिग्री में अलग-अलग सीमा हो सकती है। निश्चित रूप से, जहां कार्यवाहियों में ज़बूती और दंडात्मक परिणामों के साथ तकनीकी/वैज्ञानिक मानकों को पूरा आदेश की आवश्यकता शामिल है, संभावना की डिग्री उच्च क्रम की होगी न कि केवल संभावना की।
79. वर्तमान मामले में, हमने जो देखा है वह यह है कि उच्च न्यायालय ने प्रयोगशाला परीक्षणों के आधार पर, विशेष रूप से आई. ओ. सी. एल., मुंबई प्रयोगशाला द्वारा किए गए तीसरे परीक्षण और विशेषज्ञ डॉ. गोबिंद सिंह की राय के आधार पर, और यह देखते हुए कि गणितीय सटीकता के साथ तथ्य को साबित करने के लिए राजस्व की ओर से स्थापित करना आवश्यक नहीं है, यह अभिनिर्धारित किया कि विभाग इस संभावना की प्रधानता के आधार पर अपना मामला स्थापित करने में समर्थ है कि आयातित तेल बेस ऑयल नहीं बल्कि एच. एस. डी. था, जिसे अपीलकर्ताओं द्वारा आयात नहीं किया जा सकता था और न्यायनिर्णायक प्राधिकरण के आदेश को बरकरार रखा।
80. हालाँकि, उच्च न्यायालय द्वारा किया गया यह विश्लेषण और निष्कर्ष निम्नलिखित कारणों से समस्याग्रस्त हैं:
- (i) इस बारे में कोई विशेषज्ञ राय नहीं थी कि जिन नमूनों का परीक्षण किया गया था, वे वास्तव में एच. एस. डी. के थे।
 - (ii) परीक्षण परिणामों में निहित राय केवल IS:1460:2005, के कुछ विनिर्देशों के साथ नमूनों की अनुरूपता के बारे में उल्लेख कर रही थी और सभी विनिर्देशों के अनुरूपता के बारे में नहीं।
 - (iii) एक बार जब नियम बनाने वाले प्राधिकरण ने माल/पदार्थ की प्रकृति का पता लगाने के लिए आवश्यक मानकों को स्पष्ट रूप से चित्रित कर दिया था, तो बताए गए मानकों के साथ अनुपालन/अनुरूपता की आवश्यकता होगी।
 - (iv) IS:1460:2005, के तहत 21 मानदंड निर्धारित किए गए हैं और किसी भी परीक्षण ने इन सभी मापदंडों का अनुपालन नहीं दिखाया है। अंतिम और तीसरे परीक्षण ने 14 मापदंडों के अनुपालन की सूचना दी है, हालांकि जैसा कि उपरोक्त 14 मापदंडों में से 2 के संबंध में ऊपर चर्चा की गई है, अर्थात्, फ्लैश पॉइंट और

आसवन सीमा, वे अनुरूप नहीं हैं। इस प्रकार, यह नहीं कहा जा सकता है कि IS:1460:2005, के मापदंडों का पर्याप्त अनुपालन है।

(v) फ्लैश प्वाइंट, हालांकि सबसे महत्वपूर्ण पैरामीटर नहीं हो सकता है, फिर भी, मोटर वाहन तेल की प्रकृति को निर्धारित करने में इसके महत्व को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। पेट्रोलियम उत्पादों को वर्गीकृत करने के लिए फ्लैश प्वाइंट एक बहुत ही महत्वपूर्ण मानदंड है, इस मापदंड पर नमूनों का गैर-अनुपालन वर्गीकरण को संदिग्ध बना देगा।

(vi) विशेषज्ञ डॉ. गोबिंद सिंह द्वारा नमूनों के फ्लैश पॉइंट के कुछ पहलुओं पर अस्पष्ट उत्तर और गैर-स्पष्टीकरण निश्चित रूप से एचएसडी के रूप में पहचाने जा रहे नमूनों पर गंभीर संदेह पैदा करता है। विशेषज्ञ ने स्वयं यह भी नहीं कहा है कि नमूने एच. एस. डी. के हैं, सिवाय इसके कि नमूने IS:1460:2005, के कुछ विनिर्देशों के अनुरूप हैं।

(vii) विशेषज्ञ राय/प्रयोगशाला परीक्षण परिणामों में अस्पष्टता और स्पष्टता की कमी को देखते हुए, यह निष्कर्ष निकालना असुरक्षित होगा कि विभाग संभावना की प्रधानता के परीक्षण को केवल इसलिए लागू करके भी अपने मामले को साबित करने में समर्थ था क्योंकि नमूने कुछ मापदंडों के अनुरूप थे।

(viii) यदि विभाग अपने आदेश पर सभी संसाधनों के साथ और विभिन्न प्रयोगशाला सुविधाओं तक पहुंच के साथ सभी 21 मापदंडों के संबंध में नमूनों का परीक्षण नहीं करवा सका, तो मूल्यांकनकर्ताओं/अपीलकर्ताओं से नमूनों का परीक्षण करने की उम्मीद करना कि ये विनिर्देशों के अनुरूप नहीं हैं और एच. एस. डी. उचित नहीं प्रतीत होता है।

इस प्रकार, अन्यथा साबित करने के लिए मूल्यांकनकर्ताओं पर जिम्मेदारी स्थानांतरित करना अनुचित और अर्थहीन प्रतीत होता है।

(ix) आकलनकर्ताओं पर यह प्रदर्शित करने का बोझ नहीं था कि शेष 8 मापदंडों के साथ गैर-अनुरूपता इस निष्कर्ष को दूषित करेगी कि नमूने एच. एस. डी. के थे।

81. हमारी राय में उपरोक्त कठिनाइयों को दूर किया जा सकता है, यदि हम ऊपर निर्दिष्ट व्याख्या के लिए सामान्य नियमों के नियम 4 के तहत विचार किए गए "सबसे समान" के परीक्षण को लागू करते हैं।

82. वर्गीकरण के लिए वास्तविक परीक्षण, हमारे अनुसार, यह होगा कि क्या कोई भी वस्तु या पदार्थ "सबसे अधिक समान" है या टैरिफ अधिनियम के तहत शीर्षकों और सापेक्ष खंड या अध्याय टिप्पणियों के तहत उल्लिखित किसी भी निर्दिष्ट वस्तु के साथ निकटतम समानता या समानता रखता है, न कि संभावना की प्रधानता के परीक्षण को लागू करके।
83. चित्रण के माध्यम से, हम स्थिति की व्याख्या कर सकते हैं। यदि कोई आयातक आयातित माल को "एक्स" के रूप में वर्गीकृत करता है, जो सीमा शुल्क प्राधिकरण द्वारा विवादित है और उसी को "वाई" के रूप में वर्गीकृत करता है, तो परीक्षण यह होगा कि क्या आयातित माल उपरोक्त नियमों के नियम 4 के संदर्भ में "एक्स" या "वाई" के "सबसे अधिक समान" हैं। आयातक यदि चाहे तो यह भी दावा कर सकता है कि माल "जेड" के समान है, हालांकि यह "वाई" के समान भी हो सकता है, यदि ऐसा दावा उसके लिए अधिक फायदेमंद है। इस प्रकार, सीमा शुल्क प्राधिकरण द्वारा यह दिखाया जाना चाहिए कि आयातित वस्तुओं का विशिष्ट वस्तुओं के साथ सबसे अधिक संबंध या समानता या समानता है, न कि केवल समानता या समानता। दूसरे शब्दों में, परीक्षण यह होगा कि क्या आयातित माल निर्दिष्ट वस्तु के साथ निकटतम समानता या समानता रखता है ताकि इन्हें निर्दिष्ट वस्तु के लिए "सबसे समान" माना जा सके। निश्चित रूप से, संभावना की प्रधानता का सिद्धांत उचित वर्गीकरण के लिए "सबसे समान" के अधिक उच्च परीक्षण से कम हो सकता है। आयातित माल एक से अधिक निर्दिष्ट वस्तुओं के समान हो सकता है, इस स्थिति में, जब तक कि संभावना की प्रधानता के परीक्षण में उच्च डिग्री लागू नहीं की जाती है, तब तक उचित वर्गीकरण में कठिनाइयाँ हो सकती हैं। हालाँकि, उक्त कठिनाई को दूर किया जा सकता है यदि "सबसे समान" का परीक्षण लागू किया जाता है। यदि आयातित वस्तुओं की विशेषताओं से पता चलता है कि माल अन्य निर्दिष्ट वस्तुओं की एक श्रृंखला के बीच निर्दिष्ट वस्तुओं के "सबसे अधिक समान" हैं, तो इन आयातित वस्तुओं को उन निर्दिष्ट वस्तुओं के रूप में वर्गीकृत किया जाना चाहिए जिनके साथ ये सामान सबसे अधिक समानता या सबसे अधिक विशिष्टता रखते हैं। इस प्रकार, हमारे विचार में, प्रायिकता की प्रधानता के सिद्धांत का अनुप्रयोग एक सटीक परीक्षण प्रदान नहीं करता है। अधिक सटीक और सटीक परीक्षण यह होगा कि क्या विचाराधीन माल "सबसे अधिक समान" हैं या निर्दिष्ट माल के समान हैं, जैसा कि ऊपर निर्दिष्ट नियम 4 के तहत प्रदान किया गया है।

84. वर्तमान मामले में, जैसा कि ऊपर देखा गया है, उच्च न्यायालय का निष्कर्ष मुख्य रूप से संभावना की प्रधानता के परीक्षण को लागू करने पर आधारित है जो आवश्यक रूप से "सबसे समान" परीक्षण को पूरा नहीं कर सकता है। उच्च न्यायालय अपूर्ण परीक्षण रिपोर्टों और विशेषज्ञ डॉ. गोबिंद सिंह की गैर-प्रतिबद्ध राय के आधार पर निष्कर्ष पर पहुंचा, जिन्होंने स्पष्ट रूप से यह नहीं कहा था कि आयातित सामान एचएसडी हैं। ऐसी कोई राय नहीं थी कि आयातित माल "सबसे समान" के परीक्षण को संतुष्ट करने के लिए एच. एस. डी. के समान हैं। आयातित वस्तुओं को एच. एस. डी. के रूप में वर्गीकृत करने के लिए रिपोर्ट और राय में यह निश्चित राय और निष्कर्ष नहीं है कि आयातित सामान एच. एस. डी. के "सबसे अधिक समान" हैं।
85. विचाराधीन तेल IS1460:2005, के संदर्भ में एचएसडी के विनिर्देशों को पूरी तरह से संतुष्ट नहीं करता है। इसलिए, सही परीक्षण यह होगा कि क्या जारी किया गया तेल/वस्तु एच. एस. डी. के समान है या नहीं, जिसके लिए प्रयोगशाला परीक्षण रिपोर्ट और वैज्ञानिक विशेषज्ञों की राय के रूप में उपयुक्त वैज्ञानिक साक्ष्य अत्यधिक प्रासंगिक होंगे।
86. ऊपर चर्चा किए गए कारणों से, चूंकि परीक्षण के परिणाम अनिर्णायक हैं, इसलिए विशेषज्ञ की राय होने के कारण, हम उच्च न्यायालय के निष्कर्ष से सहमत नहीं हैं। इन परिस्थितियों में, इस न्यायालय के समक्ष विकल्प यह है कि या तो आयातित उत्पाद को आगे के परीक्षणों के लिए फिर से भेजा जाए और कम से कम इस प्रभाव से विशेषज्ञ की राय प्राप्त की जाए कि आयातित उत्पाद एच. एस. डी. के 'सबसे अधिक समान' है, भले ही वह IS1460:2005 के तहत सभी मानकों को पूरा नहीं करता है या अपीलार्थियों को संदेह का लाभ दें और विवादित आदेशों को रद्द करके अपीलार्थियों के खिलाफ कार्यवाही बंद करें, क्योंकि राजस्व/सीमा शुल्क प्राधिकरण अनिर्णायक साक्ष्य के आधार पर अपीलार्थियों के खिलाफ कार्रवाई नहीं कर सकता है।
87. जहां तक पहले विकल्प का संबंध है, जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, हालांकि प्रश्न किए गए उत्पाद को तीन प्रमुख प्रयोगशालाओं में प्रयोगशाला परीक्षण के लिए भेजा गया था, इन प्रयोगशालाओं ने निर्णायक निष्कर्ष नहीं दिया कि उत्पाद वास्तव में एचएसडी है और विशेषज्ञ भी एक निश्चित राय नहीं दे सके। इसके अलावा इतने लंबे समय के बाद हमें संदेह है कि क्या विचाराधीन तेल अभी भी कई विशेषताओं और गुणों को बनाए रखेगा जो एक प्रभावी परीक्षण के लिए आयात के समय मौजूद थे जैसा कि ऊपर कहा गया है। इसलिए, हम इस समय आयातित उत्पाद/तेल के आगे के परीक्षण

का निर्देश देना उचित नहीं मानते हैं और इस तरह के पुनः परीक्षण को एक व्यर्थ अभ्यास माना जा सकता है। हमारी राय में, तथ्यों और परिस्थितियों में, एक बार के उपाय के रूप में नए परीक्षण के लिए निर्देश देने और नए विशेषज्ञ की राय लेने के बजाय, अनिर्णायक साक्ष्य के कारण अपीलार्थियों को संदेह का लाभ देना अधिक उचित होगा।

88. इन अपीलों से अलग होने से पहले, हम कुछ सहायक निर्देश जारी करना आवश्यक समझते हैं।

हमारा विचार है कि सीमा शुल्क प्राधिकरण द्वारा निर्धारित सभी मानकों पर किसी भी उत्पाद/वस्तु/माल की जांच न करने से हमेशा अनिश्चितता और संदेह पैदा होंगे, जिन्हें जल्दी कार्यवाही से निपटने के दौरान हटाने की आवश्यकता होती है।

लंबे समय तक चले मुकदमे की उत्पत्ति भारतीय मानक विनिर्देश ब्यूरो के तहत प्रदान किए गए सभी मापदंडों के परीक्षण के लिए पर्याप्त सुविधाओं की अनुपलब्धता में निहित है। यदि सभी मापदंडों के लिए परीक्षण सुविधाएं उपलब्ध होतीं तो इस तरह के विवाद से बचा जा सकता था। चूंकि अधिकारियों ने स्वयं वस्तुओं के वर्गीकरण के लिए विशिष्ट मानदंड निर्धारित किए थे, जैसा कि वर्तमान मामले में IS 1460:2005, के तहत वर्गीकरण का उल्लेख करके किया गया है यह सुनिश्चित करना अधिकारियों का दायित्व है कि इन सभी मानकों पर किसी भी विवादित वस्तु के परीक्षण के लिए आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएं, अन्यथा ऐसे मानकों को निर्धारित करना अर्थहीन होगा।

इसलिए, भविष्य में इन कठिनाइयों, संदेहों और अनिश्चितताओं से बचने के लिए, प्रतिवादी को यह सुनिश्चित करने का निर्देश दिया जाता है कि इन सभी मापदंडों के लिए परीक्षण करने के लिए उपयुक्त प्रयोगशालाओं में उचित सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएं या कम से कम उन मापदंडों के लिए जिन्हें अधिकारी "सबसे समान" परीक्षण को पूरा करने के लिए आवश्यक मानते हैं, जिनके बिना मुद्दे में लेख को ठीक से वर्गीकृत नहीं किया जा सकता है। तदनुसार, हम प्रतिवादी को भविष्य में सभी मानकों में उचित परीक्षण के लिए छह महीने की अवधि के भीतर इस संबंध में आवश्यक कदम उठाने का निर्देश देते हैं।

89. ऊपर चर्चा किए गए कारणों के लिए, हम 2021 की राजस्व कर अपील संख्या 297, 2021 की राजस्व कर अपील संख्या 298 और 2021 की राजस्व कर अपील

संख्या 299 में पारित किए गए विवादित सामान्य निर्णय और आदेश दिनांकित 20.01.2022, को दरकिनार करके इन अपीलों की अनुमति देते हैं।

90. अपीलों का तदनुसार उपरोक्त शर्तों में निपटारा किया जाता है।

मामले का परिणाम: अपीलों का निपटारा किया गया।

[†]मूल बिंदु तैयार किए गए: अंकित ज्ञान

अनुवादक: शशी शर्मा